दो साल की बच्ची की दुष्कर्म के बाद हत्या

पुलिस हिरासत से भाग रहा आरोपी पकड़ा गया

मेरठ। (भाषा) उत्तर प्रदेश में मेरठ जिले के सदर बाजार थाना क्षेत्र में परिवार के साथ सो रही दो साल की एक बच्ची को एक युवक कथित तौर पर उठाकर ले गया और दुष्कर्म करने के बाद उसकी हत्या कर दी। पुलिस ने यह जानकारी दी। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने शनिवार को बताया कि इस मामले में पकड़ा गया आरोपी पुलिस हिरासत से फरार हो गया था जिसे पकड़ने का प्रयास किया गया तो उसने पुलिस टीम पर गोली चलाई, जिसके बाद जवाबी गोलीबारी में उसके दोनों पैरों में गोली लगने के बाद उसे गिरफ्तार कर लिया गया। मेरठ के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (एसएसपी) डॉ. विपिन टाडा ने शनिवार रात बताया कि शुक्रवार देर रात सदर बाजार थाना क्षेत्र में परिवार के साथ सो रही दो वर्षीय एक बच्ची को मोइश (20) नामक एक युवक उठा कर ले गया और उसके साथ दुष्कर्म करने के बाद उसकी हत्या कर दी। एसएसपी ने बताया कि शाम करीब चार बजे पुलिस जब आरोपी मोइश को गिरफ्तार करने के बाद मेडिकल परीक्षण कराने के लिए ले जा रही थी, तभी भैंसाली बस अड्डे के पास पुलिस को चकमा देकर वह फरार हो गया। उन्होंने बताया कि शनिवार शाम सवा छह बजे के करीब कंकरखेड़ा रेलवे प्लेटफार्म के पास खंडहर के निकट घेराबंदी कर पुलिस ने आरोपी को पकड़ने का प्रयास किया तो वह पुलिस टीम पर गोलियां चलाने लगा।

एसएसपी ने बताया कि पुलिस की जवाबी कार्वाई में आरोपी के दोनों पैरो में गोली लगी और उसे पुन: गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस का कहना है कि आरोपी के पास से एक तमंचा बरामद हुआ है और अब उसे गिरफ्तार कर पूछताछ कर यह पता लगाया जा रहा है कि भागने के बाद किसने उसे हथियार उपलब्ध कराया। एसएसपी ने बताया कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट में यह तथ्य सामने आया कि आरोपी ने बच्ची के साथ दुष्कर्म किया है, जिसके आधार पर मुकदमे में भी दुष्कर्म की धारा जोड़ी गई है। उनके मुताबिक संगीन धाराओं में इस पर भी कार्वाई की जा रही है। टाडा के अनुसार घायल आरोपी को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। इसके पहले शनिवार सुबह पुलिस अधीक्षक (नगर) आयुष विक्रम सिंह ने बताया था कि शुक्रवार देर रात सदर थाना क्षेत्र की झुग्गी बस्ती में एक युवक परिजनों के साथ सो रही दो साल की बच्ची को कथित तौर पर दुष्कर्म करने की नीयत से लेकर भागा, लेकिन परिजनों की आंख खुल गई। उन्होंने कहा था कि परिजन बच्ची को आरोपी के चंगुल से बचाने के लिए उसके पीछे दौड़े, तो पकड़े जाने के डर से वह बच्ची को पास में ही आबू नाले में फेंककर फरार हो गया। उन्होंने बताया कि बच्ची का शव शनिवार सुबह नाले में मिला, उसे पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है।

मथुरा से चार अंतरराज्यीय लुटेरों को गिरफ्तार किया

मथुरा। जिले में पुलिस ने मुठभेड़ के बाद चार कथित अंतरराज्र्ईय लुटेरों को गिरफ्तार किया, जिनमें से तीन मुठभेड़ के दौरान गोली लगने से घायल हो गए। एक अधिकारी ने शनिवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि इन्होंने नया गिरोह बनाया था और गोवर्धन मार्ग पर नहर पटरी के पास एक व्यापारी को लूटने की साजिश रच रहे थे। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक शैलेश कुमार पांडेय ने बताया कि पुलिस ने जिले के विशेष अभियान समूह (एसओजी) की मदद से शुक्रवार रात बदमाशों को घेर लिया। उन्होंने बताया कि इसके बाद लुटेरों ने पुलिस पर गोली चलानी शुरू कर दी, जवाबी कार्वाई में तीन आरोपी घायल हो गए। उन्होंने बताया कि उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पांडेय ने बताया कि गिरोह का सरगना अभिषेक तिवारी इंदौर (मध्यप्रदेश) का रहने वाला है और उसके खिलाफ वहां करीब 24 मुकदमे दर्ज हैं। उस पर मध्यप्रदेश पुलिस ने पांच हजार रुपए का इनाम घोषित किया हुआ है। पुलिस ने बताया कि अन्य तीन लुटेरों की पहचान आकाश, विशंभर और विष्णु राणा के रूप में हुई है। पुलिस ने बताया कि पैर में गोली लगने से अभिषेक, विशंभर और विष्णु राणा घायल हो गए। उसने बताया कि अपराधियों के पास से एक चोरी की मोटरसाइकिल, पुलिस की दो वर्दियां और कारतूस सहित अवैध हथियार बरामद किए गए हैं। पुलिस ने बताया कि ए लोग पुलिस की वर्दी पहनकर लूटपाट करते थे।

यमुना में डूबने से दो भाइयों की मौत

आगरा। आगरा में शनिवार को यमुना में स्नान के दौरान डूबने से दो भाइयों की मौत हो गई। पुलिस ने यह जानकारी दी। उसने बताया कि इन दोनों की पहचान फिरोजाबाद जिले के नोसेरा गांव के आर्यन (17) और बंशी (18) के रूप में हुई है। पुलिस का कहना है कि आर्यन और बंशी अपने चाचा राजेश (40) के साथ एक भंडारे में शामिल होने के लिए बटेश्वर मंदिर आए थे। वे पंचमुखी महादेव घाट पर यमुना में नहाने उतरे और इसी दौरान गहरे पानी में चले गए।

एनसीएल ने सतर्कता जागरूकता अभियान का किया भव्य शुभारंभ

सोनभद्र। शुक्रवार को भारत सरकार की मिनीरत्न कंपनी नॉर्दर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड एनसीएल ने केंद्रीय सतर्कता आयोग के दिशा निर्देशन में सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2024 के उपलक्ष्य में निवारक सतर्कता हेतु सतर्कता जागरूकता अभियान की शुरुआत की। एनसीएल द्वारा यह अभियान 16 अगस्त, 2024 से 15 नवंबर, 2024 तक आयोजित किया जा रहा है जिसमें क्षमता निर्माण, परिपत्रों, दिशानिर्देशों एवं मैनुअलों का नवीनीकरण, व्यवस्थित सुधार एवं उपायों के कार्यान्वयन और डायनामिक डिजिटल प्रेजेंस जैसे विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। एनसीएल मुख्यालय में आयोजित कार्यक्रम के दौरान एनसीएल के मुख्य सतर्कता अधिकारी रवींद्र प्रसाद और एनसीएल मुख्यालय के अन्य अधिकारियों ने ईमानदारी और सत्यनिष्ठा के उच्च मानकों को बनाए रखने और भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई का समर्थन करने हेतु शपथ ग्रहण किया। गौरतलब है कि एनसीएल द्वारा इस वर्ष सतर्कता जागरूकता सप्ताह 28 अक्टूबर 2024 से 3 नवम्बर 2024 तक मनाया जाएगा। इस बार का विषय सत्यनिष्ठा कि संस्कृति से राष्ट्र कि समृद्धि रखा गया है।

सीएम ने ओलम्पियन ललित और राजकुमार को किया सम्मानित

गाजीपुर। पेरिस ओलंपिक 2024 मे कास्य पदक जीतने वाली भारतीय हॉकी टीम का हिस्सा रहे यू0पी0 के दो खिलाड़ी जो जनपद से ही है ललित कुमार उपाध्याय एवं राजकुमार पाल का सम्मान समारोह कार्यक्रम मेघबरन सिंह स्टेडियम करमपुरए सैदपुर आयोजित हुआ। मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ ने कांस्य पदक विजेता भारतीय हॉकी टीम का हिस्सा रहे दो खिलाड़ी ललित उपाध्याय व राजकुमार पाल को उनके परिजनो संग स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। मुख्यमंत्री ने अपने सम्बोधन मे कहा कि पेरिस ओलंपिक खेल का आयोजन 26 जुलाई से 11अगस्त तक चलाए जिसमे भारत ने एक रजत व पॉच कास्य पदक जीते जिसमे प्रदेश के दो हॉकी खिलाड़ियों ने भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व करते हुए कांस्य पदक जीतने मे अपनी अहम भूमिका निभाई जिनका आज सम्मान समारोह आयोजित हो रहा है। उन्होने खिलाड़ियो एवं उनके परिजनो को शुभकामना देते हुए दोनो खिलाड़ियों को 1.01 करोड़ रूपये देने की घोषणा की तथा खिलाड़ी राजकुमार पाल जो इस जनपद के निवासी है उन्हे सम्मान स्वरूप डिप्टी एसपी के पद पर चयन करने की घोषणा की। इसके साथ उन्होने कहा कि उत्तर प्रदेश के खिलाड़ी जिन्होने ओलंपिक मे देश का प्रतिनित्व किया उन्हे 10.10 लाख की सम्मान राशि लखनऊ मे सम्मान समारोह के दौरान आयोजित कार्यक्रम मे दी जायेगीं। मुख्यमंत्री ने कहा कि ललित उपाध्याय एवं राजकुमार पाल की माता की साधना का नतीजा है कि वह आज इस मुकाम पर है। ललित उपाध्याय पहले ही डिप्टी एस पी बनाये जा चुके है तथा राजकुमार पाल जल्द ही डिप्टी एसपी होगें। उन्होने मेघबरन सिंह हॉकी एकेडमी के प्रबन्धक पूर्व सांसद राधेमोहन सिंह एवं स्व तेजबहादुर सिंह जिन्होने हॉकी की नर्सरी को बढाने मे अपनी अहम भूमिका निभाई उनकी भूरि.भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि आज जो दो खिलाड़ी भारतीय हॉकी टीम का प्रतिनिधित्व करते हुए भारत का गौरव बढा रहे है यह उन्ही की साधना का परिणाम है।उन्होने कहा कि मा0 प्रधानमंत्री जी ष्खेला इण्डिया खेलोष् के लिए हर खिलाड़ी को खेलने के लिए प्रोत्साहित करते है तो उसके पीछे भी एक भाव होता है कि अगर आप देश के लिए खेलेगे तो देश आपके लिए जान लगा देगा। कहा कि खेल को बढावा देने के लिए सरकार लगातार कार्य कर रही है ए खिलाड़ियो के लिए हर जिले मे एक स्टेडियमए ब्लाक स्तर पर मिनी स्टेडियम ग्राम पंचायत मे खेल का मैदान बनाया जा रहा है।

बंगाल की मुख्यमंत्री का पुतला फूंका

मुग़लसरायध्चन्दौली । कोलकाता स्थित आरजी कर मेडिकल कॉलेज में ट्रेनी चिकित्सक के साथ हुए बलात्कार और हत्या के बाद से पूरे देश में उबाल है। लोग दोषियों को कड़ी सजा देने की मांग कर रहे है। शनिवार नगर में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ताओं ने पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का पुतला फूंका । इस दौरान उनके खिलाफ कार्यकर्ताओं ने जमकर नारेबाजी की ।बता दे कि 8.9 अगस्त की रात कोलकाता के आरजी कर अस्पताल के सेमिनार हॉल में एक ट्रेनी महिला चिकित्सक के साथ हैवानियत हुई थी। वह वहां बेहोशी के हाल में मिली थीं । उसे तुरन्त उपचार के लिए लें जाया गया लेकिन इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई थी। महिला चिकित्सक के शरीर पर चोटों के कई निशान थे । पोस्टमार्टम रिपोर्ट के अनुसार हत्या से पहले की प्रकृति और सेक्सुअल पेनेट्रेशन की बात कही गई थी। बताया गया कि बाद में पीड़िता की हत्या गला घोंटकर कर दी गई । महिला चिकित्सक की दर्दनाक मौत से लोगों ने आक्रोश है। लोग पश्चिम बंगाल में कानून व्यवस्था पर सवाल खड़ा कर रहे है । पुतला दहन के दौरान अभाविपा के कार्यकर्ताओं ने व्यवस्था पर सवाल खड़ा कर रहे है । पुतला दहन के दौरान अभाविपा के कार्यकर्ताओं ने कहा कि पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री को इस्तीफा दे देना चाहिए । वही दूसरी तरफ दोषियों को कड़ी सजा देने की मांग की। इस मौके पर तेजप्रताप सिंहए अंकित गुप्ताए विशाल जायसवालए चाहत सिंहए गोल्डी जायसवाल आदि मौजूद रहे।

भगवान के दरबार में चतुराई नहीं चलती

लखनऊ। धरती पर मनुष्य से ज्यादा चतुर कोई भी जीव नहीं है। लेकिन भगवान के दरबार में कभी भी चतुराई नहीं चलती है। भगवान के दरबार में चतुराई करने वाला व्यक्ति कभी भी सुखी नहीं रह पाता है। बात.बात में छल पूर्वक चतुराई करने वाला व्यक्ति अपने जीवन में कभी भी सुखी नहीं हो पाता है। भगवान की कथा से हमें यही शिक्षा मिलती है। उक्त बातें लखनऊ के सुशांत गोल्फ सिटी, दयालबाग में चल रही नौ दिवसीय श्री राम कथा के आठवें दिन पूज्य प्रेमभूषण जी महाराज ने व्यासपीठ से कहीं। सरस् श्रीराम कथा गायन के माध्यम से भारतीय और पूरी दुनिया के सनातन समाज में अलख जगाने के लिए जनप्रिय कथावाचक प्रेमभूषण जी महाराज ने चित्रकूट से भैया भरत की वापसी से आगे के प्रसंगों का गायन करते हुए कहा कि भगवान की कृपा प्राप्त करनी है तो हमें स्वयं अपने आहारए व्यवहार और विचार में परिवर्तन लाने की जरूरत है। हमें मानस जी की यह शिक्षा हमेशा ध्यान में रखनी चाहिए . मनए कर्मए वचन छाड़ि चतुराईए भजत कृपा करि हहिं रघुराई। जीवन में कभी भी सज्जनता का त्याग नहीं करना चाहिए। क्योंकि भगवान भी सज्जनों की पीड़ा का हरण करने के लिए ही आते हैं। पूज्य श्री ने कहा कि सुख चाहते हैं तो बनावटी जीवन से बचने का प्रयास करें। जो व्यक्ति जीवन में बनावटीपन का आश्रय लेता है उसका जीवन स्वत: दुखों में घिरता चला जाता है। वह चाह कर भी उन दुखों से बाहर नहीं निकल पाता है। इस कथा के आयोजक उत्तर प्रदेश के परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह की पूजनीया माता जी ए सह आयोजक दयाल ग्रुप के चेयरमैन राजेश सिंह दयाल और खुशहाली फाउंडेशन के चेयरमैन सोनू सिंह ने व्यास पीठ पर उपस्थित भगवान का पूजन किया और भगवान की आरती की। कई विशिष्ट अतिथि कथा में उपस्थित रहे। बड़ी संख्या में उपस्थित श्रोतागण को महाराज जी के द्वारा गाए गए दर्जनों भजनों पर झूमते हुए देखा गया। कथा की व्यवस्था में लगे देवेश राय ने बताया कि कल कथा पूर्णाहुति के बाद मंत्री जी की ओर से विशाल भंडारा सम्पन्न होगा।

वृंदावन के आश्रय सदनों की विधवा महिलाओं ने प्रधानमंत्री को भेजीं हाथ से बनाईं राखियां

मथुरा। वृन्दावन के आश्रय सदनों में रहने वालीं विधवा और निराश्रित महिलाओं ने हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के लिए अपने हाथों से बनाई राखियां भेजी हैं। सुलभ इंटरनेशनल के विधवा सहाय कार्यक्रम की उपाध्यक्ष विनीता वर्मा ने बताया कि इस परंपरा की शुरुआत इसके संस्थापक बिंदेश्वरी पाठक ने की थी। उन्होंने कहा कि उनका मानना था कि विधवाओं को भी अन्य महिलाओं की तरह सभी प्रकार के शुभ तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों और त्योहार मनाने का अधिकार है। उन्होंने बताया कि इस बार प्रधानमंत्री को भगवान राम और ठाकुर बांकेबिहारी के चित्र वाली 551 राखियां भेजी जा रही हैं।

ब्रास इंडस्ट्रीज एसोसिएशन ने कैबिनेट मंत्री नंद गोपाल नंदी को सौंपा पत्रक

मीरजापुर । नगर पालिका अध्यक्ष श्यामसुंदर केशरी ने व्यापारियों की समस्या को लेकर शुक्रवार की देर शाम गुडहट्टी स्थित मारवाड़ी धर्मशाला में एक बैठक आहूत की।इस बैठक में मीरजापुर के दौरे पर पहुंचे मीरजापुर प्रभारी और कैबिनेट मंत्री नंद गोपाल नंदी ने मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे।बैठक में व्यापारियों ने अपनी समस्या से कैबिनेट मंत्री को अवगत करायाएजिसके निस्तारण के लिए उन्होंने आश्वस्त करते हुए कार्यवाही का भरोसा भी दिलाया।इस दौरान पीतल उद्योग के उत्थान को लेकर नगर पालिका अध्यक्ष के साथ मीरजापुर ब्रास इंडस्ट्रीज एसोसिएशन के जनरल सेक्रेटरी आशीष सिंह ने एक.एक पत्रक सौंपा।इस पत्रक में उन्होंने ने पीतल उद्योग के लिए एक अलग क्लस्टर बनानेएमीरजापुर में अलग ब्रास सिटी पार्क बनानेएधातु हस्तशिल्प सेवा केंद्र मुरादाबाद के सहयोग से नौजवानों के लिए एक ट्रेनिंग सेंटर एवं गरीब कामगारों और उनके परिवार के आर्थिक उत्थान की मांग रखी है।जिससे गिरते हुए पीतल उद्योग को बढ़ावा मिलेगा और रोजगार सृजन भी हो सकेगा।उन्होंने कहा की इस उद्योग से प्रत्यक्ष रूप से हजारों लोग जुड़े हैएउद्योग को आगे बढ़ाने के लिए यहां विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।दिल्ली से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जुड़ी निफ्ट की प्रोफेसर डॉली कुमार ने कैबिनेट मंत्री को पीतल उद्योग के रोड मैप को लेकर विस्तृत जानकारी भी दी।

नैनो उर्वरक समय के साथ बदलाव की मांग

इफ्को घियानगर फूलपुर में मनाया गया 78 वां स्वतंत्रता दिवस समारोह

प्रयागराज। इफ्को घियानगर फूलपुर में 78 वां स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि आर पी सिंह निदेशक एचआर एवं लीगल एवं विशिष्ट अतिथि शोभा सिंह रहे। मुख्य अतिथि आर पी सिंह ने ध्वजारोहण किया। इफ्को सुरक्षा गार्ड पीएसी बैण्ड के जवान केन्द्रीय विद्यालय स्कॉउट गाइड के बच्चों ने मार्च पास्ट में हिस्सा लिया। पीएसी बैण्ड द्वारा देशभक्ति के धुनों पर मनोहर प्रस्तुति दी जिसका नेतृत्व हवलदार केशव सिंह ने किया। आर पी सिंह ने कहा कि आज हम अपना 78 वां स्वतंत्रता दिवस मना रहे हैं। यह हमें दो वर्षों अंग्रेजों की गुलामी नहीं बल्कि एक हजार वर्ष की गुलामी के उपरांत मिली है। जिन लोगों ने आजादी के लिए कुर्बानी दी है एवं संघर्ष किया है उनको हमारा नमन और श्रद्धांजलि एवं वो हमारे प्रेरणा है। उन्होंने भारत की स्वतंत्रता यात्रा के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि आजादी मिलना एक बात है लेकिन उसे कायम रखना उससे भी बड़ी बात है क्योंकि हमें तथा हमारे पड़ोसी मुल्कों को लगभग एक ही समय आजादी मिली थी लेकिन वहाँ जारी राजनैतिक अस्थिरता सैन्य शासन लोकतंत्र का आभाव मौलिक अधिकारों का हनन हिंसा आज चिंता का विषय है। उन्होंने कहा कि जब हम आजाद हुए थे तो हमारे लिए सबसे बड़ा संकट खाद्यान का संकट था लेकिन हरित क्रांति एवं आधुनिक खाद के उपयोग से आज हम कृषि आत्मनिर्भर देश है। लेकिन वर्तमान समय एक दूसरा संकट जैसे पर्यावरण मिट्टी की गुणवत्ता ग्लोबल वार्मिंग की समस्या एवं उसका विकल्प। इफ्को ने नैनो यूरिया प्लस एवं नैनो डीएपी लेकर आया जो इन चुनौतियों से निपटने में सहायक है। नैनो उर्वरक समय के साथ बदलाव की मांग है एवं आने वाले समय में यह मील का पत्थर साबित होगा। केन्द्रीय विद्यालय एवं ओम बाल विद्या मंदिर के बच्चों ने शानदार सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। सुझाव योजना के तहत विजेता कर्मचारियों मेधावी छात्र.छात्राएं एवं स्थानीय ग्राम प्रधानों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन शरद अग्निहोत्री ने किया। इसके अतिरिक्त मुख्य अतिथि आर पी सिंह ने नैनो संयंत्र का दौरा किया। अंतर्राष्ट्रीय सहकारी गठबंधन आईसीए के सहकारी कानून समिति सीएलसी के सदस्य बनने तथा फूलपुर इकाई आगमन पर इफ्को ऑफिसर्स एसोसिएशन एवं इफ्को इम्पलाइज संघ के कार्यालय में उनका भव्य स्वागत किया गया। इस दौरान वरिष्ठ कार्यकारी निदेशक इकाई प्रमुख संजय कुदेशिया महाप्रबंधक संजय वैश्य एम डी मिश्र ए पी राजेन्द्रनए संजय भंडारी पी के सिंह संयुक्त महाप्रबंधक डॉ अनिता मिश्रा पी के पटेल रत्नेश कुमार अरूण कुमार अरवेन्द्र कुमार एस के सिंह ए के गुप्ता विभागाध्यक्ष मानव संसाधन शम्भू शेखर इफ्को ऑफिसर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष अनुराग तिवारी और महामंत्री स्वयम प्रकाश इफ्को इम्प्लाइज संघ के अध्यक्ष पंकज पाण्डेय और महामंत्री विजय कुमार यादव तथा बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

सोमवार को मनाया जायेगा रक्षाबंधन का पर्व

प्रयागराज। भाई बहनों के बीच खूबसूरत रिश्तों का जश्न मनाने वाला त्यौहार रक्षाबंधन भाई बहनों के प्यार हिफाज़त और ज़िंदगी भर के रिश्तों की एक मीठी याद दिलाता है। जी टीवी के कलाकार भी त्यौहार मना रहे हैं। इस दिन बहनें अपने भाइयों की कलाई पर एक पवित्र धागा यानी कि राखी बांधती हैं जो भाइयों की सलामती के लिए बहनों की प्रार्थना का प्रतीक है। असल में आजकल यह त्यौहार सिर्फ दो बहनों या भाइयों के बीच भी मनाया जाने लगा है। यह त्यौहार अपने रीति रिवाजों से परे है जो परिवारों को बांधे रखने वाले गहरे रिश्तों को दर्शाता है। यह परिवारों के लिए फिर से मिलने यादें ताजा करने और एक दूसरे के प्रति आभार जताने का भी समय है। रक्षाबंधन एक दिल छू लेने वाली याद की तरह है कि चाहे ज़िंदगी हमें कहीं भी ले जाए। इस खास दिन पर प्यार का पहला नाम राधा मोहन के मनित जौरा रब से है दुआ के धीरज धूपर कुमकुम भाग्य की सृष्टि जैन कुंडली भाग्य के शक्ति आनंद कैसे मुझे तुम मिल गए की प्रतीक्षा होनमुखे और भाग्य लक्ष्मी की ऐश्वर्या खरे जैसे जी टीवी के कलाकारों ने बताया कि उनके भाई बहन उनके लिए कितनी अहमियत रखते हैं।

आकाशीय बिजली की चपेट में आने से युवक की मौत

बीजपुर/सोनभद्र। शुक्रवार को आकाशीय बिजली की चपेट में आने से स्थानीय थाना क्षेत्रान्तर्गत स्थित ग्राम सभा डोड़हर निवासी 21 वर्षीय प्रेमचंद पुत्र रामगोविंद की मौत हो गई। प्राप्त जानकारी के अनुसार युवक प्रेमचंद इंटक बेल के पास किसी कार्य से गया हुआ था उसी दौरान तेज बारिश के बीच आकाशीय बिजली के गिरने से उसकी मौत हो गई। साथ ही साथ अन्य दो व्यक्ति के झुलसने की भी सूचना लोगों द्वारा बताया जा रहा है। सूचना पाकर मौके पर पहुंची बीजपुर पुलिस ने मृतक की परिजनों की उपस्थिति में शव का पंचनामा करवाकर उसे रात्रि हो जाने के कारण शनिवार की सुबह अन्त्य परीक्षण हेतु सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र दुद्धी भेजवा दिया।

अनफिट वाहनों के पंजीयन 31 अगस्त तक नही तो होगा निरस्त

गाजीपुर। जनपद की सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी सौम्या पाण्डेय ने बताया है कि परिवहन आयुक्त कार्यालय उ0प्र0 लखनऊ द्वारा 08 जुलाई से 15 अगस्त तक अनफिट वाहनों के पंजीयन निलम्बित किये गये है अगले 15 दिनों मे 31 अगस्त तक सभी अनफिट वाहनों का फिटनेस न कराने पर इनका पंजीयन निरस्त कर दिया जायेगा। इस सम्बन्ध में सभी स्कूल प्रबन्धकों एवं वाहन स्वामियों को अवगत कराना है कि उप संभागीय परिवहन कार्यालयए आकर फिटनेस सम्बन्धित स्लॉट बूक कराकर वाहनों का फिटनस करवाना सुनिश्चित करे। अन्यथा की दृष्टि में पंजीयन निरस्त होने पर कार्यालय की कोई जिम्मेदारी नही होगी।

लोन की राशि अदा न करने पर किसान की कुर्क हुई जमीन

बाराबंकी। आर्यावर्त बैंक के लखनऊ परिक्षेत्र की खैराकन्कू शाखा से लोन लेकर उसकी राशि को जमा न करना ग्राम.बाला खेड़ाए खैराकन्कूए जनपद.बाराबंकी के वीरेन्द्र कुमार पर भारी पड़ गया। राजस्व कर्मियों ने किसान की भूमि को कुर्क कर उस पर लाल झंडी लगा दी है। बुधवार को खैराकन्कू शाखा के शाखा प्रबंधक ने नायब तहसीलदार हैदरगढ़ बाराबंकी सुश्री नम्रता दुबे एवं अमीन श्री राजकुमार निगमए श्री राजेन्द्र कुमार व लेखपाल श्री राजेश सरोज टीम सहित ग्राम बाला खेड़ा पहुँचकर किसान वीरेन्द्र कुमार पुत्र देवीदीन की बंधक भूमि पर लाल झंडी लगाकर कुर्क करने की कार्यवाही की है। वीरेन्द्र कुमार पर बैंक का रु0 10ण्00 लाख और उसका ब्याज बकाया है। शाखा प्रबंधक खैराकन्कू शाखा ने बताया कि वीरेन्द्र कुमार को बकाया जमा करने की चेतावनी दी गयी थीए परन्तु उनके द्वारा बकाया जमा नहीं किया गयाए उसी के तहत यह कार्यवाही हुयी है।

जिसमें जोखिम लेने का पर्याप्त साहस नहीं है, वह जीवन में कुछ भी हासिल नहीं कर पाएगा। -मोहम्मद अली

भव्यतम ओलंपिकों की परंपरा से परे पेरिस ओलंपिक अब तक का सबसे कंजूस आयोजन था। इतना कि भारतीय खिलाड़ियों के लिए एयरकंडीशनर बाहर से मंगाने पड़े। अलबत्ता यह कंजूसी पेरिस में ओलंपिक कमेटी की सबसे बड़ी ब्रांडिंग थी। कहा गया कि पेरिस ओलंपिक सबसे किफायती और नए तौर-तरीके वाला आयोजन है, जिसकी अधिकांश लागत निजी स्रोतों से आ रही है।

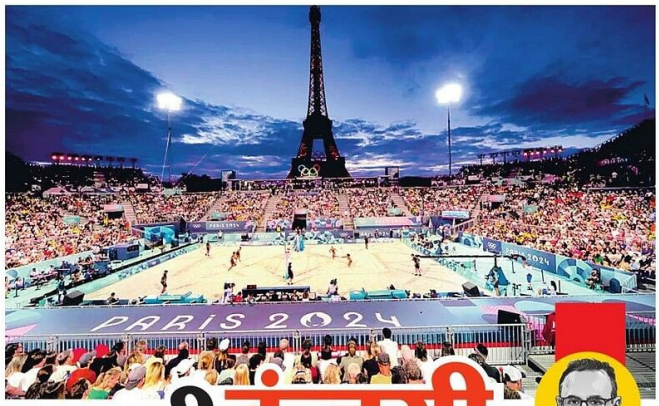

इतनी कंजूसी कहां से आई

अंशुमान तिवारी
वरिष्ठ लेखक-पत्रकार

मॉन्ट्रियल ओलंपिक में खेल से ज्यादा चर्चा दो बातों की है। एक, ओलंपिक की लागत 30 करोड़ डॉलर की जगह 1.5 अरब डॉलर हो गई है और दूसरा, *मॉन्ट्रियल गजट* में कार्टूनिस्ट एसलिन का कार्टून, जिसमें मेयर जॉन ड्राप्यू 'गर्भवान' दिखाए गए हैं। उन्होंने एम्सटर्डम में ओलंपिक की मेजबानी लेते हुए एलान किया था कि जैसे कोई पुरुष मां नहीं बन सकता, ठीक उसी तरह ओलंपिक खेलों से कभी घाटा नहीं हो सकता।

जीत-हार, विवाद-सफलता की सुर्खियों के बीच पेरिस ओलंपिक की एक और खासियत पर आपकी निगाह गई क्या? भव्यतम ओलंपिकों की परंपरा से परे यह अब तक का सबसे कंजूस आयोजन था। इतना कंजूस कि भारतीय खिलाड़ियों के लिए एयरकंडीशनर बाहर से मंगाने पड़े। अलबत्ता यह कंजूसी पेरिस में ओलंपिक कमेटी की सबसे बड़ी ब्रांडिंग थी। बार-बार कहा गया कि पेरिस ओलंपिक अब तक का सबसे किफायती और नए तौर-तरीके वाला आयोजन है, जिसकी अधिकांश लागत निजी स्रोतों से आ रही है। पेरिस ओलंपिक की लागत करीब 4.4 अरब डॉलर रही। ओलंपिक में पुराने अंतरराष्ट्रीय प्रायोजक जैसे-टोयोटा, कोक, एयर बीनएनबी और नाइकी के अलावा स्थानीय कंपनियां भी आईं, जैसे आर्सेलर मित्तल ने मशालों का स्टील बनाया, तो लुई वितों ने मेडल। ओलंपिक की एक-तिहाई लागत कॉरपोरेट ने उठाई, जबकि बची हुई लागत टिकटों, लाइसेंसिंग और ओलंपिक कमेटी ने अपने फंड से दी। दावा है कि पेरिस का करीब 96 फीसदी बजट निजी कंपनियों से आया।

आधुनिक ओलंपिक फ्रेंच आभिजात्य और शिक्षाविद पियरे द कुबर्तिन की देन है। इसी पेरिस के सोरबोन में 1894 में इंटरनेशनल ओलंपिक काउंसिल बनी और 1896 में एथेंस में पहला आधुनिक ओलंपिक हुआ, जिसमें 14 देश आए थे। उनके देश और शहर में फिर मजमा लगा, तो ओलंपिक वाले इस खेल में उत्साह से ज्यादा, इसकी छवि को लेकर

मॉन्ट्रियल ओलंपिक, 1976 का स्टेडियम

सतर्क रहे। ओलंपिक महंगा तमाशा है और आयोजकों का इतिहास बला का दागदार है। इन खेलों को भव्य के बजाय सस्ता रखने की मुहिम पेरिस से क्यों शुरू हुई? आइए, टाइम मशीन में बैठकर चलते हैं उस दौर में, जहां एक ओलंपिक के बाद कुबर्तिन का मिशन खतरे में पड़ गया। फिर ओलंपिक को बचाने के लिए आयोजन का पूरा चोला ही बदल दिया गया। और यह लीजिए, हम आ गए एम्सटर्डम। यह 1970 की मई है। ट्यूलिपों के देश की ऐतिहासिक राजधानी। 1976 के 21वें ओलंपियाड के मेजबान का फैसला होना है। इंटरनेशनल ओलंपिक कमेटी की बैठक में लंबी खींचतान चली है। अंततः मास्को और लॉस एंजिलिस को हरा कर कनाडा का मॉन्ट्रियल शहर 1976 के ओलंपिक की मेजबानी ले उड़ा है।

मॉन्ट्रियल के मेयर जॉन ड्राप्यू ने मेजबानी लेते हुए एलान किया कि 'जैसे कोई पुरुष मां नहीं बन सकता, ठीक उसी तरह ओलंपिक खेलों से कभी घाटा नहीं हो सकता।' अब हम सीधे मॉन्ट्रियल जा रहे हैं, जहां लंबा प्रवास होगा। शहर में प्रवेश करते ही आपको लगने लगा होगा कि एम्सटर्डम में जो सुना था, उससे बिल्कुल विपरीत लग रहा है। मौसम नागवार है मॉन्ट्रियल का। राजनीतिक आबोहवा और भी ज्यादा जहरीली है। क्यूबेक के उग्रवादी संगठन एफएलक्यू ने ब्रिटिश काउंसलर जेम्स क्रॉस और राज्य के डिप्टी प्रीमियर पियरे लोपार्टे का अपहरण कर लिया है। प्रधानमंत्री पियरे त्रूदो ने शहर में मार्शल लॉ लगा दिया है। बख्तरबंद गाड़ियां गश्त कर रही हैं। मौसम की मार और फौज की निगहबानी के बीच हम निकलते हैं, ओलंपिक की तैयारियां देखने। मेयर जॉन ड्राप्यू एम्सटर्डम में बोल आए हैं कि ओलंपिक का मतलब ही है मेजबान को आर्थिक लाभ। वह ओलंपिक की मेजबानी पर करीब 30 करोड़ डॉलर के खर्च का हिसाब लेकर एम्सटर्डम पहुंचे थे। इसमें से करीब 7.1 करोड़ कनाडाई डॉलर नए ओलंपिक स्टेडियम पर खर्च हो रहे हैं। वह खुद इस स्टेडियम और खेल गांव का निर्माण देख रहे हैं। मॉन्ट्रियल के अखबारों में छह माह बीतते-बीतते देरी की खबरें तैरने लगी हैं। ऑटोमेटिक छत वाला भीमकाय स्टेडियम विवादों में फंस गया है। ताकतवर क्यूबेक लेबर यूनियन ओवरटाइम की मांग को लेकर हड़ताल पर चली गई है। हड़तालों, भ्रष्टाचार के आरोपों और असंख्य विवादों को देखते हुए हम अब 1975 में आ गए हैं। तैयारी बुरी तरह पिछड़ गई है। आयोजन खतरे में है। सरकार ने फ्रेंच आर्किटेक्ट टैलीबर्ट को हटा दिया है। एक साल बचा है और अंधाधुंध पैसा झोंककर किसी तरह काम कराया जा रहा है। 1974 से 1976 के बीच करीब 155 दिनों की हड़तालें हो चुकी हैं।

ले-देकर किसी तरह ओलंपिक के उद्घाटन का दिन आया। इस स्टेडियम में खेल से ज्यादा चर्चा दो बातों की है। एक, ओलंपिक की लागत 30 करोड़ डॉलर की जगह 1.5 अरब डॉलर हो गई है और दूसरा, *मॉन्ट्रियल गजट* में कार्टूनिस्ट एसलिन का कार्टून, जिसमें मेयर जॉन ड्राप्यू 'गर्भवान' दिखाए गए हैं। मेयर ड्राप्यू फोन से देश के सबसे बड़े गर्भपात विशेषज्ञ से बात कर रहे हैं। मेयर जॉन ड्राप्यू ने एम्सटर्डम में ओलंपिक की मेजबानी लेते हुए एलान किया था कि जैसे कोई पुरुष मां नहीं बन सकता, ठीक उसी तरह ओलंपिक खेलों से कभी घाटा नहीं हो सकता। मॉन्ट्रियल ओलंपिक इस शहर पर करीब 1.6 अरब कनाडाई डॉलर का कर्ज छोड़ गया है, जो 2006 में जाकर खत्म होगा। मॉन्ट्रियल की विफलता ने सरकारों को डरा दिया है। 1980 का मास्को ओलंपिक शीतयुद्ध की चपेट में फंसकर विफल हो गया है। फिर ओलंपिक की मेजबानी के लिए कोई आगे नहीं आ रहा था। लॉस एंजिलिस को ओलंपिक मिल गया। कुबर्तिन का सपना खतरे में है। यह 1981 का दौर है। आइए, सीधे चलते लॉस एंजिलिस ओलंपिक कमेटी के दफ्तर में, जहां आपको दिख रहे हैं, कमेटी के चेयरमैन पीटर उबेरॉथ। पोलो खिलाड़ी और ट्रैवल कारोबारी उबेरॉथ पर ओलंपिक की मेजबानी नहीं, बल्कि इस परंपरा को बचाने का जिम्मा है। उबेरॉथ ने एलान कर दिया है, ओलंपिक अब अकेले नगरीय सरकारों की जिम्मेदारी नहीं होंगे। इनमें कॉरपोरेट स्पॉन्सरशिप आएगी। निजी फंड निवेश होंगे। खूब विज्ञापन होंगे। कुछ दकियानूसी उन्हें बिसूर रहे हैं। इस बीच खेल शुरू हो गए हैं। इंतजार पदक तालिका का नहीं है। दुनिया तो यह जानना चाहती है कि उबेरॉथ के ओलंपिक बिजनेस मॉडल से क्या हुआ?

...यह लीजिए साहब, तालियों की गड़गड़ाहट के बीच उबेरॉथ ने बताया कि लॉस एंजिलिस को ओलंपिक से करीब 22.5 करोड़ डॉलर का मुनाफा हुआ। ओलंपिक अब मुनाफे का मेला हो गया है। उबेरॉथ दूसरे पियरे द कुबर्तिन बन गए हैं, जिन्होंने ओलंपिक को उबार लिया। इसके बाद तो फिर ओलंपिक काउंसिल की निकल पड़ी। बड़े-बड़े ब्रांड, लाइसेंस, प्रसारण राइट्स...पैसा ही पैसा...भ्रष्टाचार बोनस में।

पेरिस का मेला उखड़ चुका है। इस बार ओलंपिक घाटे में नहीं रहा। वैसे बीते तजुर्बों के बाद कहा जा रहा है कि बार-बार शहर-शहर आयोजन का भारी खर्च क्यों करना? नए स्टेडियम बनाना और फिर उनका कोई इस्तेमाल नहीं! क्यों न एक ही शहर को हमेशा के लिए मेजबानी दे दी जाए और स्थायी बुनियादी ढांचा बना दिया जाए। क्या आप इससे सहमत हैं? बहस दिलचस्प है...

हम जल्द मिलेंगे, अगले सफर पर...

सिर्फ तनाव से नहीं उड़ता बालों का रंग

सारा क्लेन
द न्यूयॉर्क टाइम्स

अगली बार जब आप किसी युवा के बाल असमय सफेद देखें, तो तनाव को इसकी वजह बताकर उसका तनाव और न बढ़ाएं।

बालों की सफेदी को अक्सर बुढ़ापे या बुजुर्गियत से जोड़ा जाता है, लेकिन हमेशा ऐसा नहीं होता। आजकल तो कम उम्र के युवाओं के बाल भी सफेद होने लगते हैं। अब कहा जाने लगा है कि तनाव के कारण बाल सफेद हो जाते हैं। लेकिन क्या आपको पता है कि बालों की सफेदी को तनाव से जोड़ने का कोई तार्किक आधार नहीं है। कुछ अध्ययनों में समय से पहले बालों के सफेद होने का संबंध तनाव से जोड़ा गया है, लेकिन किसी भी अध्ययन में अब तक इसे साबित नहीं किया गया है। उत्तरी कैलिफोर्निया के कैसर परमानेंट वैलेजो मेडिकल सेंटर में त्वचा विशेषज्ञ डॉ. पारादी मिरमीरानी ने कहा, 'इस संबंध में अब भी बहुत कुछ ऐसा है, जिसके बारे में हम नहीं जानते हैं।'

वर्ष 2021 में मनुष्यों के एक छोटे समूह पर अध्ययन करते हुए शोधकर्ताओं ने 14 स्वयंसेवकों के बालों के नमूने चुने, जिनके बाल कुछ हद तक सफेद हो चुके थे। शोधकर्ताओं ने पाया कि सबसे तनावपूर्ण क्षण में ही लोगों के बाल सफेद हुए। कोलंबिया विश्वविद्यालय में व्यवहार चिकित्सा के एसोसिएट प्रोफेसर और अध्ययन के लेखक मार्टिन पिकार्ड ने कहा कि यह पहली बार था, जब किसी अध्ययन ने विशिष्ट तनावपूर्ण घटनाओं को बाल सफेद होने से जोड़ा। शोधकर्ताओं का मानना है कि अगर ऐसे शोध जारी रहते हैं, तो एक दिन ऐसे उपचार सामने आ सकते हैं, जो बालों को फिर से काला कर सकते हैं। लेकिन इसके लिए अब बड़े मानव समूहों पर शोध की आवश्यकता है। शिकागो विश्वविद्यालय में त्वचाविज्ञान की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. बारबोसा कहती हैं कि ज्यादातर लोगों के बाल सफेद होने का मुख्य कारण आनुवंशिकी है। अगर आपके माता-पिता में से किसी के बाल कम उम्र में सफेद हो गए हैं, तो आपके भी बाल सफेद होने की आशंका है। वह कहती हैं कि कुछ चिकित्सीय स्थितियों के कारण भी बाल जल्दी सफेद हो सकते हैं। थायरॉयड का अधिक या कम सक्रिय होना और कीमोथेरेपी के चलते भी बाल जल्दी सफेद हो सकते हैं। आयरन, कैल्शियम, विटामिन बी12 और डी की कमी भी बाल जल्दी सफेद होने के कारण हैं, साथ ही मोटापा और धूम्रपान भी। तो अगली बार अगर आप किसी के बाल असमय सफेद देखें, तो तनाव की बात करके उसे और तनाव न दें।

©The New York Times 2024

आत्मापि चायं न मम सर्वा वा पृथिवी मम। यथा मम तथाऽन्येषामिति चिन्त्य न मे व्यथा। एतां बुद्धिमहं प्राप्य न प्रहृष्ये न च व्यथे।।

अर्थात यह शरीर भी मेरा नहीं या पृथ्वी भी मेरी नहीं है। ये सब वस्तुएं जैसे मेरी हैं, वैसे ही दूसरों की भी हैं। ऐसा सोचकर मेरे मन में इनके लिए कोई व्यथा नहीं होती है। इसी बुद्धि को पाकर न मैं शोकाकुल और न ही हर्षित होता हूं। ऐसी सोच वाला ही सुखी रह पाता है।

-शांतिपर्व 174/14 (पुत्र निधन से शोकाकुल राजा सेनजित को ब्राह्मण का उपदेश)

प्रस्तुति : विवेक चौरसिया

जानना जरूरी है
संस्कृति के पन्नों से

आशुतोष गर्ग
लेखक एवं अनुवादक

ब्रह्मा ने शेषनाग से कहा, मेरी आज्ञा है...इस पृथ्वी पर असंख्य पर्वत, वन, सागर, ग्राम, विहार और नगर स्थित हैं। परंतु पृथ्वी हिलती-डुलती रहती है। तुम इसे अपने सिर पर धारण करो, जिससे यह अचल हो जाए।

हिलने-डुलने वाली पृथ्वी कैसे हुई स्थिर?

महर्षि कश्यप की पत्नी कद्रू के पुत्र नाग थे। उनमें से महायशस्वी शेषनाग को अपनी माता का स्वभाव अच्छा नहीं लगता था। इसलिए उन्होंने कद्रू का साथ छोड़कर तपस्या करने का निश्चय किया। शेषनाग गंधमादन पर्वत पर बदरिकाश्रम तीर्थ में रहते हुए ब्रह्मा को प्रसन्न करने के लिए तप करने लगे। वह केवल वायु पीकर रहते और संयमपूर्वक व्रत का पालन करते थे। शेषनाग ने अपनी इंद्रियों को भी वश में कर लिया था। बाद में उन्होंने गोकर्ण, पुष्कर, हिमालय के तटवर्ती प्रदेशों तथा भिन्न-भिन्न पुण्य-तीर्थों और देवालयों में भी रहकर संयम-नियम के साथ एकांतवास का पालन किया।

ब्रह्मा ने देखा कि शेषनाग के घोर तप के चलते उनके शरीर का मांस, त्वचा और नाड़ियां सूखने लगी थीं। वह सिर पर जटा और शरीर पर वल्कल धारण करके मुनिवृत्ति से रहते थे। उनमें सच्चा धैर्य था और वह निरंतर तप में संलग्न थे। यह देखकर एक दिन ब्रह्मा उनके पास आकर बोले, 'शेष! तुम यह तप किसलिए कर रहे हो? तुम्हारी इस कठोर तपस्या के कारण संपूर्ण प्रजा संतप्त हो रही है। तुम्हारे हृदय में जो कामना हो, वह तुम मुझे बताओ। मैं तुम्हारी इच्छा पूर्ण करने की चेष्टा करूंगा।'

धूप आने दो

शेषनाग बोले, 'प्रभु! मेरे सहोदर सर्प-भाई मंदबुद्धि हैं। वे सदा एक-दूसरे के दोष निकाला करते हैं। मैं उनके कुटिल स्वभाव से ऊबकर तपस्या करने लगा हूं, ताकि मुझे उन्हें न देखना पड़े। वे सब मेरी विमाता विनता और उनके पुत्रों से ईर्ष्या करते हैं। आकाश में विचरण करने वाले विनता-पुत्र गरुड़ हमारे भाई हैं। मेरे पिता महर्षि कश्यप के वरदान से गरुड़ अत्यंत बलवान हैं। किंतु वे सर्प, मुझसे भी द्वेष रखते हैं। इसलिए मैंने निश्चय किया है कि मैं घोर तपस्या कर शरीर को ही त्याग दूं। आप मेरी यह मनोकामना पूर्ण कीजिए!'

परम पिता ब्रह्मा ने उनसे कहा, 'हे शेष! मैं तुम्हारे सब भाइयों की कुटिल मंशा को जानता हूं। उनकी माता कद्रू भी उन्हीं की भांति कुटिल है। उसके किए अपराधों के कारण ही तुम्हारे सर्प-भाइयों के मन में भय उत्पन्न हो गया है। परंतु इस विषय में जो कुछ होना अपेक्षित है, उसकी व्यवस्था मैंने पहले ही कर दी है। अतः तुम्हें अपने भाइयों के लिए शोक नहीं करना चाहिए। तुम जो अभीष्ट हो, वैसा वरदान मांग लो। तुम्हारे ऊपर मेरा बहुत स्नेह है। नागों का भाई होने के बाद भी तुम्हारी बुद्धि उनकी तरह दूषित नहीं है, अपितु तुम धर्म के मार्ग पर अडिग हो। मांगो, क्या चाहिए?'

शेषनाग बोले, 'मेरी केवल यही इच्छा है कि मेरी बुद्धि सदा धर्म तथा तपस्या में लगी रहे।'

ब्रह्मा ने उत्तर दिया, 'शेष! मैं तुम्हारे इंद्रियसंयम और मनोनिग्रह से अत्यंत प्रसन्न हुआ। मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूं कि तुम्हारी बुद्धि सदा धर्म में स्थिर रहेगी। अब मेरी आज्ञा सुनो। मैं तुम्हें प्रजा के हित के लिए एक कार्य सौंप रहा हूं, जिसे तुम्हें करना चाहिए।'

'कौन-सा कार्य, पितामह!'

'इस पृथ्वी पर असंख्य पर्वत, वन, सागर, ग्राम, विहार और नगर स्थित हैं। परंतु यह पृथ्वी हिलती-डुलती रहती है। तुम इसे भली-भांति अपने सिर पर इस प्रकार धारण करना कि यह पूर्णतः अचल हो जाए।'

शेषनाग बोले, 'मैं आपकी आज्ञा का पालन करूंगा। मैं इस पृथ्वी को इस तरह धारण करूंगा, जिससे यह हिले-डुले नहीं। आप इसे मेरे सिर पर रख दीजिए।'

ब्रह्मा ने कहा, 'शेष! तुम पृथ्वी के नीचे चले जाओ। यह स्वयं तुम्हें जाने के लिए मार्ग देगी।'

तब नागराज वासुकि के बड़े भाई भगवान शेष ने 'आपकी जैसी आज्ञा' कहकर ब्रह्मा को प्रणाम किया और पृथ्वी के विवर में प्रवेश कर गए। नीचे जाकर समुद्र से घिरी पृथ्वी को सब ओर से पकड़कर अपने सिर पर धारण कर लिया। इस प्रकार, यह पृथ्वी पूर्णतः स्थिर हो गई।

अध्ययन कक्ष

धूप आने दो
पेजेज प्लक्ड फ्रॉम मेमोरीज
लेखक : गुलजार

प्रकाशक : मंजुल प्रकाशन
मूल्य : 499 रुपये
हार्डकवर

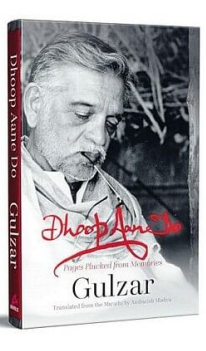

एक अनूठे मुसाफिर के कुछ हमसफर

आज जब गुलजार 90 के हो रहे हैं, उनकी ताजा किताब 'धूप आने दो' को पढ़ना ऐसा है, मानो आप उनकी यादों के पन्ने पलट रहे हों। इसमें लोग हैं, स्मृतियां हैं और ऐसे अनुभव हैं, जिन्होंने गुलजार को करीब से छुआ है।

लेखक, कवि, गीतकार, पटकथा लेखक, फिल्म निर्देशक और ज्ञानपीठ से लेकर ऑस्कर तक सभी प्रतिष्ठित राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों के विजेता गुलजार के काम और शख्सियत का दायरा इतना व्यापक है कि जिंदगी का शायद ही कोई पहलू उनसे अछूता रहता हो।

धूप आने दो एक तरह से गुलजार की आत्मकथा कही जा सकती है, जिसमें उन्होंने अपनी जिंदगी के महत्वपूर्ण लोगों पर लिखे रेखाचित्रों के जरिये दरअसल अपनी असल जिंदगी के वे अनुभव शामिल किए हैं, जिन्होंने उन्हें 'गुलजार' बनाया। इन महत्वपूर्ण लोगों में एसडी बर्मन (पंचम) हैं, जिनके साथ गीतों में प्रयुक्त शब्दों को लेकर उनकी मजेदार तकरारें पुस्तक में शामिल हैं, तो संजीव कुमार भी हैं, जिन्हें वह फिल्म इतिहास का सबसे आकर्षक अभिनेता मानते हैं, जो युवा होने पर भी एक बुजुर्ग का कमाल का अभिनय कर सकता है। फिल्म *'परिचय'* के एक दृश्य में संजीव कुमार की बेहतरीन अदाकारी देख जब गुलजार ने उनसे कोई तोहफा मांगने को कहा, तो संजीव कुमार का यह कहना कि 'पान खाना छोड़ दो' और गुलजार का तब से लेकर आज तक पान को हाथ न लगाना, दोनों के बीच रिश्तों की गहराई बयां करने के लिए काफी है। सत्यजीत रे, जिन्हें उनके नजदीकी 'मानिक दा' कहते थे, से अपनी मुलाकातों का जिक्र भी *धूप आने दो* में मिलता है। जब गुलजार, रे को धाराप्रवाह अंग्रेजी, और दूसरे ही क्षण 'भद्रलोक' की तरह बांग्ला बोलते हुए देखते हैं, तो उस बदलाव के खुद पर पड़े असर के विषय में भी बताते हैं।

धूप आने दो में उनकी हेमंत मुखोपाध्याय, पंडित रविशंकर और भीमसेन जोशी जैसी हस्तियों के साथ बिताए गए पल दर्ज हैं, तो उनकी बेटी बोस्की (मेघना गुलजार), ड्राइवर सुंदर और कुत्ते पाली के साथ रिश्ते भी खुल कर सामने आते हैं। एक ऐसी अभिनेत्री जिसकी जिंदगी छोटी रही, लेकिन जिसकी शख्सियत को आज भी वह खुद में महसूस करते हैं, मीना कुमारी और दर्द में मुस्कराने की उनकी आदत पर भी किताब में काफी कुछ दर्ज है। धूप आने दो को पढ़ते वक्त महसूस होता है कि आप गुलजार की यादों के पन्ने पलट रहे हों। यह पाठकों को उनके शुरुआती वर्षों, मुंबई में उनके व्यक्तिगत व व्यावसायिक संघर्षों, कामयाबियों के बारे में बताती है, तो विभाजन के दौर की उनकी यादें भी ताजा करती है और लॉकडाउन ने उन पर क्या असर डाला इत्यादि सब कुछ बताती है। *मुसाफिर हूं यारों या एक अकेला इस शहर में..* जैसे गीत कैसे उनकी ही जिंदगी से निकले, इसकी कहानी भी इसमें है। गुलजार की किताब है, तो कविता तो होंगी ही, दुर्लभ तस्वीरें उनकी इस निजी डायरीनुमा किताब को और दिलचस्प बनाती हैं। सबसे बड़ी बात, यह किताब उनकी सचिव फरहाना को समर्पित की गई है, जो उनके लिखे को तरतीब से रखती रही हैं। ये संस्मरण और रेखाचित्र पहले मराठी में ऋतुरंग में छपे और अंग्रेजी में अंबरीश मिश्रा ने इन्हें पेश किया है।

अभियान

हमेशा वह पहले करें, जिसे करने से आप डरते हैं।
- चार्ली चैपलिन

amarujala.com
अमर उजाला

गोल चबूतरा

Hindi@mithelesh

■ मिथिलेश बारिया

जरा-सी आहट से, वो जग जाता है रातों में,
खुदा बेटी दे गरीब को तो दरवाजा भी दे...
.....
सांस लेती हैं दीवारें
और जान ईंटों में भी होती है,
क्या तुमने कभी किसी घर को
अकेले रोते नहीं देखा...

सूर्य ग्रहण में हीलियम की खोज

आज के ही दिन सन 1868 में सूर्य ग्रहण के दौरान खगोलविदों ने हीलियम की खोज की थी। यह एकमात्र ऐसा तत्व है, जो पृथ्वी से पहले सूर्य में देखा गया था। फ्रांसीसी खगोलशास्त्री पियरे जूल्स सीजर जैनसेन ने सूर्य ग्रहण का अध्ययन करने के लिए भारत के गुंटूर में डेरा डाला, ताकि वह यह देख सकें कि चंद्रमा सूर्य के सामने से कैसे गुजरता है और सौर ऊर्जा कैसे प्रकट होती है। उन्होंने पाया कि सौर ऊर्जा बहुत गर्म हाइड्रोजन गैस से बनी थी। उन्होंने स्पेक्ट्रोस्कोप नामक एक विशेष प्रिज्म का उपयोग करके निर्धारित किया कि सूर्य से निकलने वाली पीली रोशनी, जिसे सभी अध्ययनकर्ता सोडियम मान रहे थे, की तरंग दैर्ध्य किसी भी ज्ञात तत्व की तरंग दैर्ध्य से मेल नहीं खाती थी। उनका मानना था कि इसे ग्रहण के बिना भी देखा जा सकता है, अगर यह पता लग सके कि दृश्य प्रकाश की अन्य तरंग दैर्ध्य को कैसे अवरुद्ध किया जा सकता है। बाद में पियरे ने 'स्पेक्ट्रोहेलिओस्कोप' बनाया, जो सूर्य के स्पेक्ट्रम की जांच कर सकता था। अक्तूबर 1868 में अंग्रेज खगोलशास्त्री जोसेफ नॉर्मन लॉकर ने भी यही कारनामा कर दिखाया। दोनों वैज्ञानिकों के शोध-पत्र एक ही दिन फ्रेंच एकेडमी ऑफ साइंसेस में पहुंचे, इसलिए दोनों को संयुक्त रूप से पहली बार हीलियम को देखने का श्रेय दिया गया।

झरोखा
18 अगस्त

■ भियानी से अमृता झा

रक्षाबंधन केवल बहनों का भाइयों की कलाई में रेशमी धागे को बांधने का ही पर्व नहीं है, बल्कि यह हर नौजवान से देश की सुरक्षा और उसमें रहने वाली हर बहन की रक्षा का वचन भी है।

देश और बहनों की सुरक्षा की परंपरा

प्रेम, त्याग और कर्तव्य का बंधन

बहन और भाइयों का पवित्र पर्व रक्षाबंधन सावन की पूर्णिमा को श्रद्धा से मनाया जाता है। प्राचीन काल में यज्ञ और अनेक धार्मिक अनुष्ठान करते समय सम्मिलित होने वाले लोगों की कलाइयों पर मंत्रों से सुभाषित सूत्र बांधा जाता था। यह परंपरा आज भी यथावत जारी है।

रक्षा सूत्र व्यक्ति की हर आपदा से रक्षा के लिए कटिबद्ध माना गया है। कालांतर में इसी रक्षा सूत्र का नाम रक्षाबंधन पड़ गया। रक्षाबंधन के साथ यह विश्वास और धारणा बलवती होती है कि जिस भाई को बहन ने रक्षा सूत्र बांधा है, उसका यह कर्तव्य है कि वह अपनी बहनों की हर तरह से सुरक्षा करे। इसके अलावा देश की सीमा की भी रक्षा करे, क्योंकि यहां उसकी बहन रहती है। इस तरह देश और बहनों की रक्षा का यह पवित्र पर्व संपूर्ण राष्ट्र के साथ-साथ विदेशों में भी हर वर्ष मनाया जाता है। स्वतंत्रता के पूर्व और उसके बाद रक्षाबंधन पर बहनों ने भाइयों से सामाजिक सुरक्षा एवं देश की रक्षा का वचन मांगा और अनेक अमर वीरों ने बलिदान देकर उनकी और देश की रक्षा की। रक्षाबंधन के दिन बहनें रक्षा सूत्र बांधकर भाइयों को मिठाई खिलाकर शुभकामनाएं देती हैं और भाई उनकी मांगी हुई मुराद पूरी करते हैं। आज हर त्योहार का व्यवसायीकरण हो गया है। बहनें अपने धनिक भाइयों से कीमती वस्तुएं मांगती हैं और भाई अपनी क्षमता के अनुसार, उनकी मांग को पूरा करते हैं। रक्षाबंधन पवित्रता का त्योहार है, यह मानवीय भाव का बंधन है। यह प्रेम, त्याग और कर्तव्य का पवित्र बंधन है। इस बंधन में एक बार बंध जाने के बाद इसे भुलाया जाना अत्यंत कठिन होता है। इन रेशमी धागों में इतनी शक्ति होती है कि भाई अपनी बहनों और देश की रक्षा के लिए जान पर खेल जाते हैं।

चिट्ठी 1

■ संजीव ठाकुर, रायपुर

कहां हैं महिला सुरक्षा के कानून

यह दुर्भाग्य है की भारत में महिलाओं के खिलाफ चौथा सबसे आम अपराध दुष्कर्म है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) की 2021 की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार, देशभर में दुष्कर्म के 31677 मामले दर्ज किए गए, यानी औसतन 86 मामले प्रतिदिन।

दुष्कर्म के बढ़ते मामले चिंता का विषय है, क्योंकि यह अपराध इतना सामान्य हो गया है कि अब लोगों पर इसका खास असर दिखाई नहीं देता। दुष्कर्म के अपराधियों को तुरंत मौत की सजा होनी चाहिए, लेकिन सिस्टम इतना खराब है कि पीड़िता को पहले अपराध से बचना पड़ता है और फिर जीवनभर न्याय के लिए लड़ना पड़ता है। यहां तक कि कई अपराधियों को राजनीतिक शरण तक मिल जाती है। कई बार तो अपराधी पीड़िता को जलाकर सारे सबूत ही खत्म कर देना चाहते हैं। उन्हें पकड़े जाने का भय नहीं होता है। दुष्कर्मियों ने हैदराबाद की महिला डॉक्टर को जलाकर मार डाला। हैदराबाद जैसे शहर में ऐसी घटना होना बेहद शर्मनाक है और महिला सुरक्षा के लिए बने तमाम कानूनों को मुंह चिढ़ाती है। जिस हाल में पीड़िता का शव मिला, उसमें भी राख से ज्यादा कुछ बाकी नहीं बचा था। आखिर कब तक सुरक्षा के लिए उठीं आंदोलन की चीखें दिखावटी पैबंदों से ढकने की कोशिश होगी? आज जो हालात हैं, उनसे तो यही अंदाजा लगता है कि दस गुनहगारों में सिर्फ एक को ही सजा मिल पाती है और यही हमारा सबसे बड़ा दुर्भाग्य है।

चिट्ठी 2

■ लक्ष्मण पुंडीर, श्रीनगर गढ़वाल

नए तरीके से की जाए खेती

वैज्ञानिक युग में कृषि भी आधुनिक तकनीक से होनी चाहिए। फसलों की नई नस्लों को तैयार किया जाना बेहद जरूरी है। लेकिन तकनीक ऐसी होनी चाहिए, जो किसी प्रकार का नुकसान न करे। हमें अपनी कृषि को जलवायु परिवर्तन के अनुकूल बनाना होगा।

हालांकि देश में कृषि आधुनिक तकनीक से हो रही है। बहुत सी फसलों, फलों और सब्जियों के नए रूप भी तैयार किए गए हैं और कृषि से संबंधित वैज्ञानिक तथा अन्य माहिर लोग इसके लिए निरंतर प्रयास कर रहे हैं, ताकि देश में फसलें, फल, सब्जियों को आधुनिक तकनीक से तैयार किया जाए, जिससे किसानों को कम लागत में फसल की अधिक पैदावार मिले। किसान भी नई तकनीक को अपना रहे हैं।

प्रौढ़ शिक्षा, शिक्षा पाठ्यक्रम में इस विषय को प्रमुखता देने के लिए भी सरकार को गंभीरता दिखानी चाहिए और गांवों में सप्ताह में एक बार इस विषय से संबंधित नुक्कड़ नाटकों का आयोजन होना चाहिए। फसल चक्र विधि अपनाने से किसान अपनी फसल की पैदावार को बढ़ा सकते हैं, क्योंकि इस विधि से धरती में उपजाऊ ताकत बनी रहती है और फसल रोग, कीट आदि से सुरक्षित रहती है। सरकार को चाहिए कि वो कृषि विशेषज्ञों के साथ मिलकर ऐसी तकनीक विकसित करे, जिससे देश के हर राज्य में मौसम की बेरुखी से होने वाले फसलों के नुकसान से किसानों को बचाया जा सके। जिस तरह मौसम का चक्र परिवर्तन हुआ है, उसी हिसाब से फसलों को पैदा किया जाए, उनकी खेती की जाए।

चिट्ठी 3

■ राजेश कुमार चौहान, जालंधर

इनकी चिट्ठियां भी सराहनीय रहीं

अमरोहा से डॉ. महताब अमरोहवी, मोहाली से मुनीष भाटिया, मंडी से वरेन्द्र, आगरा से डॉ. कुमकुम अज़ावल, फिरोजाबाद से शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी एवं तितिल रावत, आजमगढ़ से अवतीश कुमार गुप्ता, मेरठ से डॉ. वरेन्द्र टोंक, रचना रस्तोगी एवं पुनीत अरोड़ा, मिर्जापुर से सलिल पांडेय, गोंडा से मनीषा गोरखामी, बरेली से दिलीप कुमार गुप्ता, मुरादाबाद से पवन कुमार सिंह

हमें लिखें
abhiyan@amarujala.com

कुछ अलग

पानी के नीचे बुतों की दुनिया

दुनिया में पानी के नीचे भी एक संग्रहालय है। इस अनोखे संग्रहालय में मौजूद 500 से अधिक मूर्तियों, घरों और कारों को देखना बहुत दिलचस्प है।

कैनकन अंडरवाटर म्यूजियम ऑफ आर्ट मैक्सिको में पानी के नीचे स्थित मूर्तियों का एक अनोखा संग्रहालय है, जो 2010 में खोला गया था। इसे मूसा (म्यूजियो सुबाकुआटिको डी आर्ट) के नाम से भी जाना जाता है। इस संग्रहालय में लगभग 500 मूर्तियां हैं, जिनमें से अधिकांश को मूर्तिकार जेसन डेकैरेस टेलर और शेष मूर्तियों को मैक्सिको के पांच अन्य मूर्तिकारों ने बनाया है। यहां दो अलग-अलग गैलरी हैं, जो दो से दस मीटर की गहराई तक डूबी हुई हैं।

इस संग्रहालय को बनाने का विचार तत्कालीन मरीन पार्क निदेशक जैमे गोंजालेज कैटो ने मूर्तिकार रॉबर्टो डियाज अब्राहम और जेसन डेकैरेस टेलर के साथ बनाया था। इस म्यूजियम को बनाने का मकसद कोरल रीफ्स यानी मूंगा की चट्टानों को सुरक्षित रखना है। यहां रखी मूर्तियां कंक्रीट से बनी हैं, जिससे कोरल रीफ्स के साथ ही जलीय जीवों और पानी को भी किसी तरह का नुकसान नहीं होगा। ये मूर्तियां यहां की स्थानीय वस्तकला, व्यापार और संस्कृति को दर्शाती हैं। स्कूबाडाइविंग करते हुए गोताखोर या पर्यटक पानी के नीचे बनी आकृतियों के बीच से भी निकल सकते हैं। लगभग 500 आदमकद मूर्तियां पूरी तरह एक साथ खड़ी भीड़ में एक ऐसी दुनिया का प्रतिनिधित्व करती हैं, जिसमें हर कोई सौहार्दपूर्ण ढंग से रहता है। 'अंडरस्टैंडिंग' शीर्षक वाली एक अन्य मूर्ति में लोगों के समूह को एक मूर्ति के चारो ओर ध्यान लगाते हुए दिखाया गया है। इस संग्रहालय की गैलरी में घर और कारें भी हैं। अंत में 'द बैंकर' नामक एक आकृति में कई पुरुषों को ब्रीफकेस के साथ रेत में सिर फंसाए दिखाया गया है। आप नाव या स्कूबाडाइविंग कर इस अनोखे नजारे का आनंद ले सकते हैं।

■ कांगड़ा से रिम्पी धीमान

महान बल्लेबाजों की स्कूली दोस्ती

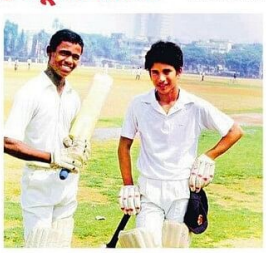

यह तस्वीर विनोद कांबली और सचिन तेंदुलकर के स्कूली दिनों की है। बाद में दोनों बल्लेबाजों ने मैदान पर कई रिकॉर्ड साझेदारियां निभाईं। ■ जम्मू से अर्चना

ग्रामोफोन

उस्ताद अमीर खान बोले, "वाह ! सारे गाने पीलू में"

मशहूर संगीतकार ओ.पी. नैयर ने शास्त्रीय संगीत न के बराबर सीखा था, लेकिन यह उनकी जैसगिफ्ट प्रतिभा थी कि उनकी धुनें रागों में परवर्तित हो जाती थीं। उनकी धुनें स्वाभाविक रूप से पंजाबी लोक रिदम के करीब होती थीं, इसलिए राग पीलू के स्वर ज्यादातर गानों की शोभा बन जाते थे। 1958 में आई फिल्म 'फागुन' के गीतों में पंजाबी लोक शैली में राग पीलू की रही अभिव्यक्ति सुखर होकर सामने आई थी। आशा भोसले की आवाज में 'पिया पिया न लागे मोरा जिया' और आशा संग मुहम्मद रफी का गाया 'मैं सोया अंखियां मींचे' में राग पीलू की ही छाया सुखरित हुई। पंजाबी लोक शैली में ही रफी और आशा का गाया 'इक परदेसी मेरा दिल ले गया' ने तो लोकप्रियता के कई रिकॉर्ड तोड़ दिए। आशा-रफी की आवाज में ही 'तुम रूठ के मत जाना' भी संगीत प्रेमियों के सिर चढ़कर बोला। उस्ताद अमीर खान ने जब नैयर को 'फागुन' के सभी गीतों को राग पीलू के सुरों में सजाने पर बधाई दी तो नैयर आश्चर्यचकित रह गए, क्योंकि उन्होंने जान-बूझकर ऐसा किया ही नहीं था।

■ गिरीश पाण्डेय, बरेली

चीजें वैसी नहीं हैं जैसी वे दिखती हैं !

अगर आप अंधविश्वास, नाटक और अराजकता को हटा दें तो किसी कहानी में से आप सच को पा लेंगे। लेकिन सेबी की कहानी का सच लगातार पीछे क्यों जा रहा है?

भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) की कहानी ने व्यापार और आर्थिक जगत का ध्यान अपनी ओर खींचा है। शर्लक होम्स ने कहा है, "अगर आप अंधविश्वास, नाटक और अराजकता को हटा दें तो आपके पास सिर्फ तथ्य बचेंगे।" इस कहानी में अंधविश्वास यह है कि सरकार हमेशा लोगों के हित में बोलती और काम करती है। नाटक यह है कि बड़े व्यवसायी छोटे निवेशकों के खिलाफ खड़े हो जाते हैं और आखिर में हम खून-खराबे से बचना चाहते हैं। अराजकता यह है कि अनेक लोग अनेक तरह से आवाजें उठाते हैं, जो सिर्फ शोर बनकर रह जाती हैं।

अगर आप अंधविश्वास, नाटक और अराजकता को हटा दें तो आप सच को पा लेंगे।

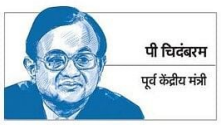

पी चिदंबरम
पूर्व केंद्रीय मंत्री

सेबी की कहानी से जुड़ा मुख्य प्रश्न

मुख्य सवाल यह था कि एक व्यावसायिक समूह में निवेश का स्रोत क्या था? समूह ने किसी भी तरह की गड़बड़ी से इनकार किया और दावा किया कि पैसा वैध था। संदेह करने वालों ने आरोप लगाया कि पैसा ऑवर-इनवॉइसिंग और राउंड-ट्रिपिंग के माध्यम से था और यह अवैध था। सेबी ने मामले की जांच की और कहा कि पहली नजर में कुछ भी गलत नहीं पाया गया, लेकिन संदेहकर्ता इससे संतुष्ट नहीं थे। अंततः सुप्रीम कोर्ट ने मामले की जांच के लिए न्यायाधीश सप्रे की निगरानी में पांच सदस्यों की समिति को जांच कर रिपोर्ट देने को कहा।

समिति ने क्या पाया?

यहां यह जानना महत्वपूर्ण है कि जस्टिस सप्रे समिति ने क्या पाया और क्या नहीं? समिति ने पाया कि इसमें 13 निवेशक थे, जिनमें से 12 विदेशी पोर्टफोलियो वाले निवेशक (एफपीआई) थे। इससे लाभ प्राप्त करने वाले प्रत्येक एफपीआई मालिक के नाम उजागर किए गए, लेकिन इस कड़ी के आखिरी निवेशक का नाम नहीं बताया गया, क्यों? क्योंकि इस अंतिम निवेशक का नाम उजागर करने की जरूरत 2018 में खत्म कर दी गई थी। सेबी ने फिर भी अक्तूबर 2020 से 13 विदेशी संस्थाओं के स्वामित्व की जांच की, लेकिन उसका नतीजा कुछ भी नहीं निकला। समिति की टिप्पणी तीखी थी- "इस तरह की जानकारी के बिना सेबी स्वयं के द्वारा किए जा रहे संदेह को संतुष्ट करने में असमर्थ है। प्रतिभूति बाजार नियामक को इस बात की आशंका है कि कुछ गलत हुआ है, लेकिन यह भी पाया गया कि संबंधित नियमों में विभिन्न शर्तों का पालन भी किया गया है। ऐसे में देखा जाए तो यह रिकॉर्ड मुर्गी और अंडे वाली स्थिति को दिखाता है।"

इससे जुड़े सवाल पर कि क्या लाभार्थी मालिक, निवेश करने वाली कंपनियों के 'संबंधित पक्ष' थे, समिति ने पाया कि 'संबंधित पक्ष' और 'संबंधित पक्ष लेन-देन' की शर्तों में नवंबर 2021 में कई तरह के संशोधन किए गए, लेकिन 1 अप्रैल, 2022 से लेकर

1 अप्रैल, 2023 तक संभावित प्रभाव देखने को मिला। कंपनी के इस पहलू पर भी समिति की टिप्पणी तल्ख ही थी- "इस तरह संभावित तरीके से शर्तें बनाने से संबंधित पाटों से लेन-देन को नियंत्रित करने वाले नियमों में छिपे सिद्धांतों का परीक्षण करने की व्यवहार्यता खत्म हो गई है।"

इस समिति का अंतिम निष्कर्ष था- "ऐसा लगता है कि एफपीआई की स्वामित्व संरचना पर सेबी की विधायी नीति एक दिशा में काम कर रही है, जबकि सेबी का प्रवर्तन दूसरी दिशा में।"

सेबी की जांच जारी है

इसके बाद भी सेबी ने 24 मामलों में अपनी जांच जारी रखी। जब समिति की रिपोर्ट सुप्रीम कोर्ट को सौंपी गई तो अदालत ने उसकी दलीलों को सुना और 3 जनवरी, 2024 के एक आदेश द्वारा सेबी की कार्रवाई को बरकरार रखा। कोर्ट ने सेबी को यह निर्देश भी दिया कि तीन महीने के भीतर अपनी जांच पूरी करे, अब तक सात महीने गुजर चुके हैं।

निजी हितों से जुड़ा मामला

सबने यह सोचा कि शॉर्ट सेलर, हिंडनबर्ग रिसर्च द्वारा लगाए गए आरोपों को जनवरी 2024 में ही खत्म कर दिया गया, लेकिन अगस्त में यह एक बार फिर सुर्खियों में तब आ गया, जब उसने सेबी के चेयरपर्सन माधबी पुरी बुच और उनके पति धवल बुच के खिलाफ आरोप लगाए। माधबी बुच को अप्रैल 2017 में सेबी का पूर्णकालिक सदस्य नियुक्त किया गया था। अपना कार्यकाल पूरा करने के एक अंतराल बाद 1 मार्च, 2022 को उन्हें अध्यक्ष नियुक्त किया गया। जब 2018 और 2021-24 में महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए तो माधबी बुच सेबी में निर्णय लेने वाले पद पर थीं।

माधबी बुच के खिलाफ आरोप ये हैं कि उनके निर्णय व्यक्तिगत रुचि से प्रभावित हैं। ऐसा लगता है कि उनके और पति के कंपनियों में कुछ आर्थिक हित थे, जिनकी जांच सेबी ने की थी और जस्टिस सप्रे समिति ने उसकी समीक्षा की थी। माधबी बुच ने अपने निवेश को स्वीकार किया, लेकिन उसका स्पष्टीकरण देते हुए कहा कि ये निवेश तब किए गए थे, जब वह और उनके पति प्राइवेट सिटीजन थे। जब माधबी पुरी की नियुक्ति सेबी में हुई तो उन्होंने इस निवेश को भुना लिया। इसके तुरंत बाद ही ये कंपनियां निष्क्रिय हो गईं।

यहां मुद्दा यह नहीं है कि माधबी बुच ने कुछ गलत किया या उनके कुछ निजी हित थे। मुद्दा यह भी नहीं है कि सरकार व्यापारिक समूह को बचाने के लिए माधबी बुच को बचा रही है। मुद्दा बहुत ही सरल और सीधा है कि क्या माधबी बुच ने अपने पिछले संबंधों और काम के साथ हितों के संभावित टकराव का खुलासा सेबी, सरकार, जस्टिस सप्रे समिति और सुप्रीम कोर्ट के सामने किया था? बिल्कुल नहीं। यहां तक कि माधबी बुच ने खुद को जांच से अलग भी नहीं किया।

यह मानते हुए कि सभी तथ्य माधबी बुच के पक्ष में हैं, कम से कम उन्होंने एक गंभीर और दोषपूर्ण गलती की है। उन्हें अपनी स्थिति साफ करनी चाहिए थी और मामले से खुद को अलग कर लेना चाहिए था। उनकी भागीदारी ने जांच को कलंकित किया है। उन्हें इस्तीफा देना चाहिए और आरोपों की नए सिरे से जांच होनी चाहिए।

Licensed by The Indian Express Limited

ओलंपिक 2036 में भारत की दावेदारी

दुनियाभर की सरकारों ने खेलों से पड़ने वाले आर्थिक और सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव के साथ-साथ आयोजन की मेजबानी से मिलने वाली अंतरराष्ट्रीय पहचान पर भी दांव लगाया है। विश्व युद्ध के बाद का यूरोप, रंगभेद के बाद का दक्षिण अफ्रीका और 2010 के दशक का ब्राजील इसके ज्वलंत उदाहरण हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ताजा घोषणा कि भारत 2036 के ओलंपिक आयोजन के प्रयासों में कोई कसर नहीं छोड़ेगा, ने एक नई उम्मीद जगा दी है।

प्रत्यूष शर्मा

खुला आकाश

यदि ओलंपिक 2036 के लिए भारत की दावेदारी आगे बढ़ती है तो खेल स्थलों, प्रशिक्षण सुविधाओं, एथलीटों के लिए आवासीय पार्क आदि सहित खेल के बुनियादी ढांचे में भारी निवेश करना होगा।

भारत ने ओलंपिक में एक अग्रदूत के रूप में रुचि व्यक्त की है, हालांकि 2036 के लिए मेजबान शहर को चुनने में समय लगेगा। इससे पहले कि हम भारत की संभावनाओं पर विचार करें, ध्यान देने योग्य बात यह है कि यह कदम भारत की वैश्विक महत्वाकांक्षाओं को उजागर करता है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता की इच्छा हो या जी-20 की अध्यक्षता को लेकर उत्साह, भारत ने लगातार अंतरराष्ट्रीय मंच पर सीट की मांग की है। ओलंपिक की मेजबानी का टैग हमारे देश को बदलती विश्व व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण स्थान दे सकता है। ओलंपिक की मेजबानी से भारत को खेल महत्वाकांक्षाओं को बढ़ावा मिल सकता है। भारत ने एशियाई खेलों में 107 पदक जीतकर शानदार प्रदर्शन किया।

ओलंपिक जैसे मेगा आयोजन एक बड़ी चुनौती भी साथ लेकर आते हैं। प्रमुख खेल अर्थशास्त्री एंड्रयू जिंबालिस्ट के अनुसार, "भारत जैसे विकासशील देश के लिए अरबों डॉलर के खेल आयोजन की मेजबानी करना कठिन होगा।" ओलंपिक समिति उन स्थानों को चुनकर खेलों की मेजबानी को और अधिक टिकाऊ बनाने की कोशिश कर रही है, जहां पहले से अधिकांश बुनियादी ढांचे मौजूद हैं। भारत की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि वह अपनी आकांक्षाओं को अंतर्निहित जटिलताओं के साथ कैसे जोड़ता है! भारी वित्तीय निवेश एक शहर में उन्नत बुनियादी ढांचे और यहां तक कि मौसम की स्थिति जैसी कई चुनौतियों के साथ ओलंपिक की मेजबानी करना भारत के लिए एक आदर्श लक्ष्य है। इस बात पर विस्तृत योजना बनाने की जरूरत है कि खेलों को कहां आयोजित किया जाए, आयोजन के लिए बनाए गए आवासों, कार्यालयों और खेल सुविधाओं को भारत के बुनियादी ढांचे में कैसे एकीकृत किया जाए। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि अगर भारत 2036 के ओलंपिक की मेजबानी करता है तो यह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हमारी बड़ी कामयाबी होगी।

एक्स से
हमारी स्वतंत्रता के लिए जिन मनीषियों ने अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया था, उनके जीवन-आदर्श सदा हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे- ओम बिरला/ लोकसभा अध्यक्ष

तय है, इस पनपते हुए शीत युद्ध के बीच हमें अपनी जगह तलाशनी होगी। 'हमें' से मेरा मतलब उन मुल्कों से है, जो विकसित देशों का शिकार बनते हुए भी अपने बलबूते प्रगति के राजमार्ग पर दौड़ने को आतुर हैं। यहां हम अपने पुरखों के क्रिया-कलाप पर भी नजर डाल सकते हैं।

खुद अपना नाखुदा बनना होगा

शशि शेखर

आजकल

क्या आपने 15 अगस्त को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का लाल किले के प्राचीर से दिया गया भाषण सुना? उन्होंने कहा, 'चुनौतियां हैं, अनगिनत चुनौतियां हैं, चुनौतियां भीतर भी हैं, चुनौतियां बाहर भी हैं और जैसे-जैसे हम ताकतवर बनेंगे... बाहर की चुनौतियां और बढ़ने वाली हैं और मुझे उसका भली-भांति अंदाज है, लेकिन मैं ऐसी शक्तियों को कहना चाहता हूं, भारत का विकास किसी के लिए संकट लेकर नहीं आता। हम विश्व में समृद्ध थे, तब भी हमने कभी दुनिया को युद्ध में नहीं झोंका है। हम बुद्ध के देश हैं, युद्ध हमारी राह नहीं है।'

इसके निहितार्थ क्या हैं?

भारतीय प्रधानमंत्री का यह कथन मुझे शेख हसीना वाजेद और कभी उनके पाकिस्तानी समकक्ष रहे इमरान खान की याद दिलाता है। वे और उनके मुल्क संकट से गुजर रहे हैं। भारत और उसके नेता बेखौफ हैं।

शेख हसीना ने अपनी जलावतनी के कुछ दिन बाद अपने पार्टीजनों को लिखे खत में दावा किया है कि अगर मैंने अमेरिका को सेंट मार्टिन द्वीप दे दिया होता, तो आज मेरा यह हाल न होता। इससे पहले 27 मई, 2024 को शेख हसीना ने यह भी कहा था- वे बांग्लादेश और म्यांमार के कुछ हिस्सों को लेकर पूर्वी तिमोर की तरह एक ईसाई देश बनाएंगे, जिसका आधार बंगाल की खाड़ी में होगा। 'वे' से उनका आशय किससे है? यह समझना मुश्किल नहीं।

शेख हसीना वाजेद के ये दोनों कथन बहुत महत्वपूर्ण हैं।

बीसवीं सदी से ही यह दुनिया हर कुछ दशक में नया निजाम गढ़ने की अभ्यस्त हो चुकी है। पहले महायुद्ध के ढाई दशक के भीतर दूसरा विश्व-युद्ध शुरू हो गया था। उसकी तपिश ठंडी पड़ी न थी कि सोवियत संघ और अमेरिका ने आस्तीनें चढ़ा लीं। वर्ष 1991 में सोवियत संघ बिखरा और पूंजीवादी सहअस्तित्व का तथाकथित नया दौर शुरू हुआ। अब उसका शीराजा भी बिखरने लगा है और दूसरे शीत युद्ध की आहटें सुनाई पड़ रही हैं। इस बार चीन और अमेरिका रू-ब-रू हैं। अमेरिका चीन की सरगोशियों को हर हाल में लाल सागर से बढ़ने से रोकना चाहता है। इसके लिए उसे बांग्लादेश या भारत में सामरिक अड्डे की आवश्यकता है। म्यांमार में जिस तरह चीन का दखल बढ़ रहा है, उससे भी साफ है कि अगर यह काम तुरंत नहीं हुआ, तो देर हो जाएगी।

बांग्लादेश पर इसीलिए दबाव बनाने की कोशिश हुई। शेख हसीना नहीं चाहती थीं कि आर्थिक विकास की डगर पर बढ़ रहा उनका मुल्क किसी भी तरह की औपनिवेशिक ताकत का निवाला बने। आज बांग्लादेश में सिले कपड़े अमेरिका, चीन और दुनिया के तमाम देशों में पहने जाते हैं। उसे अपनी तरक्की के लिए सभी की जरूरत है। वह किसी एक की शरण में क्यों जा पड़े? हसीना का यह नजरिया अपने देश के लिए भले लाभकर रहा हो, उनके देश-निकाले का कारण बन गया।

अब इमरान खान पर आते हैं। उन्होंने भीषण सियासी संघर्ष के बाद सत्ता हासिल की थी। शुरू के कुछ वर्ष तो ठीक गुजरे, पर बाद में सरकार के अंदर संघर्ष बढ़ने लगा और साथ ही बाहरी दबाव भी सघन होता चला गया। रावलपिंडी स्थित सेना मुख्यालय कोई मौका नहीं चूकना चाहता था। उसने भी इमरान विरोधियों का साथ दे दिया। नतीजतन, इमरान खान जेल में हैं। उनकी शरीक-ए-हयात बुशरा बीबी भी सलाखों के पीछे हैं। अब उनके जन-समर्थन को तोड़ने की कोशिशें की जा रही हैं।

इमरान ने भी अमेरिका पर अपनी सरकार को गिराने का आरोप लगाया था। मीडिया हाउस *द इन्टर्सेप्ट* ने पाकिस्तानी हुकूमत के गोपनीय दस्तावेजों के आधार पर पिछले वर्ष दावा किया था कि यूक्रेन-रूस युद्ध के दौरान पाकिस्तान का तटस्थ रवैया वाशिंगटन को नागवार गुजरता था। दावे के अनुसार, अमेरिकी विदेश विभाग ने 7 मार्च, 2022 को पाकिस्तानी अधिकारियों के साथ आयोजित बैठक में इमरान खान को गद्दी से हटाने का दबाव बनाया था।

मैं यहां आपको इंदिरा गांधी की याद दिलाना चाहूंगा। अपनी हत्या के कुछ महीने पहले से ही वह सार्वजनिक तौर पर दावा कर रही थीं कि विदेशी ताकतें उन्हें रास्ते से हटाने का षड्यंत्र कर रही हैं। आज यह छिपा हुआ तथ्य नहीं है कि 1980 के दशक में भारत में कहर बरपा करने वाले तथाकथित खालिस्तानी उग्रवादियों को हथियार, वैचारिक वितंडावाद, विभेदकारी रणनीति और विनाशकारी फॉर्मूला पश्चिम में बैठे लोगों ने मुहैया करवाए थे। आज भी कनाडा ऐसे भारत विरोधियों की सबसे बड़ी शरणस्थली बना हुआ है।

ध्यान दें। कनाडा 'फाइव आइज' का सदस्य है। यह गठजोड़ अमेरिका की अगुवाई में पांच पश्चिमी मुल्कों की खुफिया एजेंसियों के बीच तालमेल स्थापित करता है। इसी ने कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो को यह समझाया था कि कनाडा में सिख अलगाववादियों की हत्या के पीछे भारतीय खुफिया एजेंसी 'रॉ' का हाथ है। अमेरिका ने भी आगे चलकर इसी तरह की दावेदारी की। वहां रह रहे तथाकथित खालिस्तानी चिंतक गुरपतवंत सिंह 'पन्नू' की हत्या की साजिश का आरोप भारत पर मढ़ा था। ये वे देश हैं, जिन्होंने अपने स्वार्थ के लिए विकासशील देशों में जमकर तबाही मचाई। वे लोकतंत्र के नाम पर दूसरे देशों की जम्हूरियत से खिलवाड़ करते आए हैं।

खुद इनके यहां लोकतंत्र का क्या हाल है?

अमेरिका में इस समय राष्ट्रपति चुनाव चल रहे हैं। कुछ हफ्तों पहले डोनाल्ड ट्रंप और जो बाइडन के बीच कैसी सार्वजनिक बहस हुई थी? कई अंतरराष्ट्रीय समीक्षकों ने इसे अमेरिकी लोकतंत्र के इतिहास की सबसे शर्मनाक बहस माना था। आज भी डोनाल्ड ट्रंप और कमला हैरिस जिस तरह से एक-दूसरे पर शब्दों के प्रक्षेपास्त्र दाग रहे हैं, वे दुनिया के लोकतंत्र प्रेमियों के दिल दहला देते हैं। ब्रिटेन का भी हाल देख लीजिए। वहां आए दिन नस्लीय अथवा सांप्रदायिक हिंसा भड़क उठती है, जो कभी समूची दुनिया पर राज कर चुके इस देश के लिए लाज की बात है।

सवाल उठता है, जो देश खुद नैतिक मूल्यों के संकट से गुजर रहे हैं, वे भला दूसरों को नसीहत कैसे दे सकते हैं? अफसोस के साथ कहना पड़ता है, हमेशा से यही होता आया है- *समरथ कहुं नहिं दोषु गोसाईं।*

तय है, इस पनपते हुए शीत युद्ध के बीच हमें अपनी जगह तलाशनी होगी। 'हमें' से मेरा मतलब उन मुल्कों से है, जो विकसित देशों का शिकार बनते हुए भी अपने बलबूते प्रगति के राजमार्ग पर दौड़ने को आतुर हैं। यहां हम अपने पुरखों के क्रिया-कलाप पर भी नजर डाल सकते हैं। 1950 और 60 के दशक में एशिया और अफ्रीका के तमाम मुल्कों ने मिलकर गुटनिरपेक्ष आंदोलन की नींव रखी थी। भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी चाहें, तो परिवर्तनशील हालात के अनुरूप ऐसे किसी औपचारिक अथवा अनौपचारिक मंच की शुरुआत कर सकते हैं। पड़ोस की अस्थिरता का एक ही संदेश है। इस बदलती हुई दुनिया में अपना नाखुदा खुद बनना होगा।

@shekharkahin
@shashishekhar.journalist

स्कैन करें
आजकल स्तंभ के तहत प्रकाशित आलेखों के लिए

जीना इसी का नाम है

मोसाब अबू तोहा
युवा कवि

गाजा में कोई बच्चा अपना बचपन कहां जी पाता

तोहा अपना घर नहीं छोड़ना चाहते थे, क्योंकि माता-पिता समेत उनके तीन भाइयों का पूरा कुनबा उसमें ऊपर-नीचे एक साथ रहता था। वहां उनकी एक निजी लाइब्रेरी थी, जिससे उनको गहरी मोहब्बत थी। वह जानते थे, वहां से निकले, तो दोबारा देखना नसीब न होगा।

तारीख के पन्नों को दुनिया जब-जब पलटेगी, उसके कुछ जख्म छिपाए न छिपेंगे, दबाए न दबेंगे। फलस्तीन के घाव ऐसे ही हैं। उसके ये जख्म किसी जंग-ए-आजादी का सिला नहीं, बल्कि कुछ अपनों और ज्यादातर बाहरी ताकतों की बर्बर कूटनीति का नतीजा हैं। सन् 1948 से आज तक वहां कितने हजार बेगुनाह इसके शिकार हुए, इसकी ठीक-ठीक गिनती नहीं। मगर कुछ फलस्तीनी नौजवानों ने अब यह बीड़ा उठाया है कि वे अपने साहित्य और 'डेटा कलेक्शन' के जरिये आने वाली नस्लों को पुख्ता सुबूत सौंप जाएंगे, बल्कि इस खून-खराबे के बीच भी उन्होंने अपने जीने की उम्मीदों को कैसे सींचा, यह भी बता जाएंगे। यह कोई कम जोखिम का काम नहीं, मगर मोसाब अबू तोहा जैसे युवा तो जोखिमों के बीच ही पले-बढ़े हैं। फिर वे कहां तक डरें?

करीब 32 साल पहले गाजा के अल-शती शरणार्थी शिविर में तोहा पैदा हुए। यह वही शरणार्थी शिविर है, जो हाल में सुर्खियों में आया था। ईरान में मारे गए हमास के मुखिया इस्माइल हानिया की पैदाइश भी यहीं पर हुई थी। बहरहाल, तोहा और उनके पांच भाई-बहनों का बचपन आम बच्चों जैसा नहीं था। गाजा का कोई बच्चा, बच्चा ही कहां रहता है? उनकी जिंदगी में तो खिलौनों और खेल के मैदानों के बजाय एहतियात और हिदायतों के मुश्किल सबक ज्यादा होते हैं। तोहा सात साल के थे, जब उन्होंने इजरायली हवाई हमले को पहली बार करीब से देखा। मकानों और सामान की तबाही के मंजर से ज्यादा उस वक्त के खौफजदा चेहरे और बदहवासी का आलम मानो उनमें हमेशा के लिए पैबस्त हो गया।

उस कोहराम ने कई असर छोड़े थे। किसी को वह क्रोधित कर प्रतिशोध की ओर ले गया था, तो कोई संजीदगी की राह पर बढ़ चला। तोहा ने दूसरा रास्ता चुना। इस वारदात के कुछ महीनों बाद ही उनका परिवार बेत लाहिया शहर में आ बसा था। अच्छी परवरिश और किताबों की सोहबत से इल्म हुआ कि जंग किसी मसले का हल नहीं। जुल्म के प्रतिकार के और भी रास्ते हैं। किताबों से दोस्ती ने तोहा को इलाके में संयुक्त राष्ट्र द्वारा संचालित एक स्कूल में पहुंचा दिया, जहां पर उन्होंने अंग्रेजी भाषा सीखी। इसके बाद गाजा की इस्लामिक यूनिवर्सिटी से तोहा ने अंग्रेजी भाषा और साहित्य में स्नातक की डिग्री हासिल की। अब तक वह कविताएं, कहानियां और डायरी लेखन करने लगे थे। सुखद यह रहा कि स्नातक करते ही 2016 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा संचालित एक स्कूल में तोहा को बतौर अंग्रेजी शिक्षक नौकरी भी मिल गई।

अब जिंदगी के मायने तलाशने के दिन शुरू हुए। एक जंगजू आबादी के बीच अम्न-पसंदी की बात लोगों को बहुत जंचती नहीं है। मगर तोहा अपने तईं कोई कसर नहीं रखना चाहते थे। उन्होंने पहले ही यह गौर किया था कि इजरायली

फौजें गाजा के पुस्तकालयों को खास तौर पर निशाना बनाती हैं और कई पुस्तकालय पूरी तरह से ध्वस्त हो चुके हैं। तोहा को यह बखूबी एहसास था कि किसी कौम को अपंग बनाना हो, तो उससे सोचने-समझने की सलाहियत सबसे पहले छीनी जाती है। लिहाजा, उन्होंने गाजा के बच्चों के लिए अंग्रेजी की किताबें दान में इकट्ठा करने का अभियान शुरू किया और इस तरह साल 2017 में गाजा की पहली अंग्रेजी किताबों की 'एडवर्ड सईद लाइब्रेरी' वजूद में आई।

इस एक पहल ने तोहा को मकबूल कर दिया। प्रसिद्ध अमेरिकी विद्वान नोम चोम्स्की ने इस लाइब्रेरी को अपनी कई किताबें दान में दी हैं। उन्होंने तोहा की सराहना करते हुए इस लाइब्रेरी को गाजा के नौजवानों के लिए एक नायाब उपहार और उम्मीद की दुर्लभ किरण बताया। तोहा को 2019-20 में हॉर्वर्ड यूनिवर्सिटी के कई विभागों से वजीफे पर शैक्षिक अनुभव हासिल करने का मौका मिला। बाद में उन्होंने न्यूयॉर्क की सर्कीज यूनिवर्सिटी से फाइन आर्ट्स में मास्टर्स की डिग्री भी हासिल की। साल 2022 में उनका पहला कविता संग्रह आया- *थिंग्स यू मे फाइंड हिडेन इन माई ईयर*। इस संग्रह की कविताएं गाजा के बच्चों की पीड़ा के सजीव दस्तावेज हैं। तोहा के इस पहले ही कविता संग्रह को प्रतिष्ठित 'अमेरिकन बुक अवॉर्ड' से नवाजा गया है। उनकी लघु कथाएं और आलेख *द न्यूयॉर्क टाइम्स, द न्यूयॉर्कर, द नेशन, लिटररी हब* जैसे ख्यात प्रकाशनों में नियमित रूप से प्रकाशित होते हैं।

अक्तूबर 2023 इजरायल के 1,500 लोगों के लिए ही दुखांतकारी बनकर नहीं आया, लाखों फलस्तीनियों के लिए भी वह किसी काल से कम साबित नहीं हुआ है। 7 अक्तूबर की घटना के बाद इजरायल ने फरमान सुना दिया कि वह बेत लाहिया पर बमबारी करेगा। न चाहते हुए भी तोहा को परिवार समेत अपार्टमेंट खाली करना पड़ा। वे उसे नहीं छोड़ना चाहते थे, क्योंकि माता-पिता समेत उनके तीन भाइयों का पूरा कुनबा उसमें ऊपर-नीचे एक साथ रहता था। वहां तोहा की निजी लाइब्रेरी थी, जिससे उनको गहरी मोहब्बत थी। वह जानते थे, वहां से निकले, तो दोबारा देखना नसीब न होगा। मगर कोई चारा न था। वे सब एक शरणार्थी शिविर में गए। वहीं खबर आई, हवाई हमले में सब कुछ खाक हो गया। जहां तोहा परिवार ठहरा था, उससे सौ मीटर पर हवाई हमले में 12 लोग मारे गए थे। अब गाजा छोड़ने के सिवा कोई विकल्प न था।

तोहा इन दिनों काहिरा में रहते हैं, वहीं से फलस्तीनी बच्चों और बच्चों के पिता की मर्मांतक दास्तां सुनाते हैं। संसार भर के निजामों से उनकी इतनी ही गुहार है कि इंसान होने की सबसे बड़ी सिफत यदि दर्दमंदी है, तो उसी के वास्ते गाजा में तबाही रोकिए! तोहा को अपनी एक तस्वीर बहुत पसंद है, जिसमें वह कविता पाठ कर रहे हैं, और उनके पीछे महात्मा गांधी, मार्टिन लूथर किंग और दलाई लामा की तस्वीरें नुमायां हैं। प्रतिष्ठित पत्रिका *टाइम* ने मोसाब अबू तोहा को हाल ही में नई पीढ़ी के अगुवा लोगों में शुमार किया है।

उन्होंने गाजा के बच्चों के लिए किताबें दान में मांगने का अभियान शुरू किया और इस तरह 2017 में गाजा की पहली अंग्रेजी किताबों की 'एडवर्ड सईद लाइब्रेरी' वजूद में आई। इस एक पहल ने तोहा को मकबूल कर दिया। नोम चोम्स्की ने इस लाइब्रेरी को अपनी कई किताबें दान में दी हैं।

प्रस्तुति : चंद्रकांत सिंह

वो लम्हा

वैशाली रमेशबाबू
ग्रैंडमास्टर

सही संगत, संस्कार से चला सिलसिला

बहन ने अपने से चार साल छोटे भाई पर शतरंज का अपना पूरा ज्ञान बरसा दिया। संगत का ऐसा असर हुआ कि छोटे भाई प्रज्ञानानंद शतरंज में सवा सेर होकर आगे बढ़ने लगे। जहां भी दोनों किसी चाल में फंसते, तो मिलकर काट खोजने लगे।

संगत सही हो, तो जीवन सफलता की सीढ़ियां चढ़ते चला जाता है और गलत हो, तो उतरते-बिगड़ते देर नहीं लगती। जिन परिवारों, समाजों, देशों में संगत की चिंता की गई, वे आज किसी न किसी क्षेत्र में बहुत आगे निकल गए हैं। वाकई, संगत की चिंता बचपन में ही सबसे ज्यादा करनी चाहिए और उसमें भी स्कूल सही संगत सुनिश्चित करने के लिए ही बने हैं। वह स्कूल ही क्या, जो सही संगत न दे सके? बच्चों को सही परिवेश, प्रेरणा और संगत देने के लिए लालायित चेन्नई का वह स्कूल भी कोशिश में लगे रहता था। वहां शिक्षक ऐसी हस्तियों को आमंत्रित करते रहते थे, जिनसे बच्चों को सही दशा-दिशा मिले।

एक दिन उसी स्कूल ने दुनिया के श्रेष्ठतम शतरंज खिलाड़ी विश्वनाथन आनंद को आमंत्रित किया। आनंद के आने से पूरे स्कूल में आनंद छाया हुआ था। अनेक बच्चे आंखें फाड़े एकटक देख रहे थे। दुनिया के एक से बढ़कर एक धुरंधर खिलाड़ियों की खतरनाक शतरंजी चालों की धज्जियां उड़ाने वाले शख्स आज स्कूल की शोभा बढ़ा रहे थे। उन्हें देखकर बच्चे जितने खुश थे, उससे ज्यादा खुश तो वह खुद बच्चों को देख-देख हो रहे थे। वह बहुत सलीके से ऐसे बैठे थे और ऐसे बोल रहे थे, मानो, जो भी अब तक सीखा है, बच्चों को सब सिखा देंगे। यही अंतर होता है। धन का धनी इंसान गिन-गिनकर कम से कम देना चाहता है, जबकि ज्ञान का सही धनी चाहता है कि जो भी ज्ञान हासिल है, सब सामने वाले पर लुटा दिया जाए। आनंद भी उस दिन अपने स्वभाव के अनुरूप स्कूल में ज्ञान की वर्षा करते हुए बता रहे थे कि वह अपने जीवन में किन मुश्किलों से निकलकर कैसे चैंपियन बने? चैंपियन बनने के लिए क्या-क्या जरूरी है? बच्चों को कामयाबी के लिए क्या-क्या करना चाहिए?

आनंद अपनी बात को सरल से सरल बोली में बच्चों को समझा रहे थे, उन्हीं बच्चों में एक छह वर्षीय बच्ची भी थी, कक्षा एक की विद्यार्थी। उसका पूरा ध्यान आनंद सर की बातों में लगा हुआ था। विश्व चैंपियन अपने विश्व चैंपियनशिप मैच के बारे में बता रहे थे। उनकी जीत, जो दुनिया में मिसाल बन गई, भारतीय खेल इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज हो गई। उनके सौम्य चित्र हर भारतीय समाचार पत्रों-पत्रिकाओं की शोभा बन गए। वाकई अचरज की बात थी। पहली बार एक भारतीय युवा शतरंज में शीर्ष पर पहुंचा था और उसके बाद वह अपने शहर के एक स्कूल में बच्चों के बीच था। बच्ची विश्वनाथन आनंद की उत्साह भरी बातों में खो गई। काश! मैं भी ऐसे ही शतरंज खेल पाती। काश! मैं भी शतरंज सीख पाती। उस छोटी सी बच्ची के मन में आनंद से सत्संग की ऐसी छाप पड़ी कि उसने घर लौटकर अपने मम्मी-पापा को सब कुछ सहर्ष बताया।

माता-पिता ने भी खुशी जताई कि अच्छा है, तुम घर में सिर्फ टीवी देखती रहती हो, शतरंज भी खेला करो। वाकई, उस दौर में वह बच्ची मौका मिलते ही टीवी से चिपक जाती थी। माता-पिता भी इस बात से बहुत परेशान थे, तो उन्हें भी शतरंज के बहाने एक मौका मिल गया। उन्होंने बच्ची को शतरंज सीखने भेजने का फैसला लिया और वह बच्ची पूरे मनोयोग से शतरंज सीखने लगी। संयोग देखिए, शतरंज सिखाने वाले संस्थान में आनंद सर भी अक्सर आते थे, तो उनके सान्निध्य में सीखने का उत्साह दोगुना हो जाता था। दिलोदिमाग में चैंपियनशिप और चैंपियन बनने के सपने मंडराने लगते थे।

आनंद सर से पहली भेंट का यह भी एक बड़ा असर हुआ कि टीवी देखना बहुत कम हो गया। शतरंज के लिए ज्यादा समय मिलने लगा और वह बच्ची वैशाली रमेशबाबू कम ही उम्र में आसपास की शतरंज प्रतियोगिताओं में करामात दिखाने लगीं। बमुश्किल दस साल की उम्र में वह विश्वस्तरीय खिलाड़ियों में गिनी जाने लगीं। संयोग देखिए, उस बच्ची की संगत का असर उसके छोटे भाई पर भी अनायास पड़ा। छोटा भाई, चार साल की उम्र में ही शतरंज के लिए बहन से ऐसे लड़ने लगा कि माता-पिता को उसके लिए अलग ही चेसबोर्ड सेट खरीदना पड़ा।

बहन ने अपने से चार साल छोटे भाई पर शतरंज का अपना पूरा ज्ञान बरसा दिया। संगत का ऐसा असर हुआ कि भाई प्रज्ञानानंद शतरंज में सवा सेर होकर आगे बढ़ने लगे। जहां भी दोनों किसी चाल में फंसते, तो मिलकर काट खोजते। बहन ने भाई को सिखाया, तो भाई ने भी बहन को विश्वस्तरीय मुकाबलों में उतरने के लिए प्रेरित किया। दोनों ने अपनी कुशलता का लोहा मनवा लिया। बहन इंटरनेशनल मास्टर बनीं, तो भाई भी महज 10 की उम्र में इंटरनेशनल मास्टर बन गए। ग्रेंडमास्टर बनने वाले ये दुनिया के पहले और अकेले बहन-भाई हैं। दुनिया चर्चा करती है कि बहन-भाई हों, तो ऐसे हों, सफल और संस्कारी।

प्रस्तुति : ज्ञानेश उपाध्याय

हिंदी साहित्य की पलटीमार प्रतिभा

तिरछी नजर

सुधीश पचौरी हिंदी साहित्यकार

यह स्मार्टफोन भी क्या चीज है कि बहुत सारे कूड़े-कचरे के साथ हमें अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध दुनिया की 'टॉप टेन' या 'टॉप ट्वेल्व' किताबों के बारे में बिना पूछे भी रोज बताता रहता है। यूं पहले भी ऐसा होता रहा है, लेकिन तब सोशल मीडिया नहीं था, इसलिए 'टॉप टेन/ टॉप ट्वेल्व' की लिस्ट बताने वाला भी नहीं था।

एक वक्त में *अमीर कैसे बनें* या *सफल कैसे बनें* जैसी किताबों का बड़ा बोलबाला था। उनके नकली संस्करण दिल्ली के कनॉट प्लेस की पटरियों पर बीस-तीस रुपये में मिला करते थे। इनके साथ हिटलर की *मीन कैंफ* का हिंदी संस्करण भी दिख जाता था। इनको पेपर बैक या 'पॉपुलर बुक्स' या 'पल्प बुक्स' कहा जाता है। ज्ञानीजन इनको 'लोअर कल्चर' की, यानी हीनतर किताबें मानते हैं। ये किताबें लोगों का ध्यान खींचा करतीं और खूब बिकतीं।

इन दिनों सोशल मीडिया में कुछ ऐसी ही टॉप टेन किताबें दिखती हैं, लेकिन कुछ नए नामों के साथ। जैसे, *थिंक ऐंड ग्रो रिच* (नेपोलियन हिल), *48 लॉज ऑफ पॉवर* (रॉबर्ट ग्रीन), आर्ट ऑफ *मैनिपुलेशन : हाउ टु मैनिपुलेट एनीबडी टु डू एनीथिंग व्हाट यू वांट* (ओमर जानसन), *स्ट्रैटजीज ऑफ वार* (रॉबर्ट ग्रीन)। इन लिस्टों में मार्क्वेज से लेकर मैकियावेली तक नजर आते हैं। इनके प्रचार में भारी निवेश किया जाता है।

इनमें से अधिकांश किताबें एक निष्ठुर पूंजीवादी विचारधारा को बेचने वाली होती हैं। जो हर आदमी की पैसा बनाने, दूसरे को उल्लू बनाने और युद्ध-रणनीतियों की कामना का दोहन करती हैं। वे उन सबको अपील करती हैं, जो रातोंरात अमीर होना चाहते हैं। और आज ऐसा कौन है, जो नहीं चाहता कि वह खूब पैसा बनाए और दूसरों पर हर हाल में जीत हासिल करे!

मन में सवाल उठा कि इनमें हिंदी की कोई किताब क्यों नहीं है? फिर ख्याल आया, हिंदी की तो तब होंगी, जब हिंदी में ऐसी किताबें हों और अंग्रेजी दुनिया उनको 'लिफ्ट' दे। सोचा, हम अंग्रेजी वालों का मुंह क्यों ताकें? हिंदी की अपनी 'टॉप टेन' क्यों न ठेलें? तभी याद आया, सोशल मीडिया पर हिंदी के कई वीर बालक पहले ही अपने-अपने हिसाब से 'टॉप टेन', 'टॉप इलेवन' की लिस्ट ठेलते रहते हैं।

इस तरह सबकी टॉप टेन मिलकर टॉप सौ या डेढ़ सौ की संख्या दिखाने लगती हैं। ऐसे ही कुछ लेखक दूसरे की टॉप टेन की लिस्ट में अपनी किताब को न पाकर उस पर गुटबाजी करने के आरोप लगाने लगते हैं। कुछ तो इस कदर नाराज हो जाते हैं कि टॉप टेन वाले को साहित्य की दुनिया का सबसे बड़ा 'क्रिमिनल' बताने लगते हैं। उसको 'फ्रेंड लिस्ट' से निकाल देते हैं या खुद निकल जाते हैं। दिसंबर में ऐसे दृश्य खूब नजर आते हैं। शुरू में आरोप-प्रत्यारोप होते हैं, फिर 'यू शट अप, यू शट अप' होता है, फिर यही गाली-गलौज वर्ग संघर्ष में बदल जाता है, फिर कुछ दिनों बाद वे एक-दूसरे के गले मिलने लगते हैं, अगली फाइट के लिए!

इस गजब की 'पलटीमार' प्रतिभा को देख पहली बार मेरे मन ने भी पलटी मारी। अब तक मैं हिंदी लेखकों के अवसरवाद को कोसा करता था, लेकिन इस बार मेरे मन में उनकी इस अदा के प्रति प्यार उमड़ने लगा, क्योंकि पहली बार इस 'पलटीबाजी' में मुझे 'डिकॉलोनाइज' के कुछ 'तत्व' नजर आए। अपनी नई पलटीबाजी को देख मैंने अपने आप से कहा- अपने हिंदी वाले को कम न समझना! तू भी तो कमोबेश उन्हीं के जैसा है। तू भी तो जानता है कि ऐसे 'पल्प ज्ञान' को पढ़े बिना ही हिंदी लेखक इतना जानता होता है कि दूसरे को कैसे उल्लू बनाना है, अपना उल्लू कैसे सीधा करना है या कब किसको पूंछ दिखानी है और कब मूंछ!

वह उस्तादों का उस्ताद होता है। इतना ज्ञान तो वह मां के पेट से सीखकर आता है। मुझे इस पलटीबाजी पर गर्व है, क्योंकि मैं भी पलटीमार हूं। यही पलटीबाजी हिंदी को 'डिकॉलोनाइज' कर सकती है।

कटाक्ष

राजेंद्र धोड़पकर